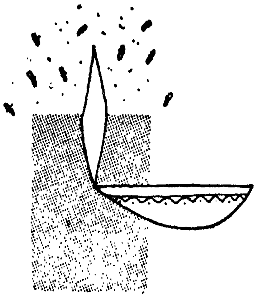


सौदा

और उनकी शायरी



सम्पादक

सरस्वती सरन 'कैफ़'

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
जुलाई, १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

पूछना अशआर का 'सौदा' के क्या है शायरो
गुफ़्तगू में उसकी पाता हूं 'नज़ीरी'[1] का दिमाग़



१. फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि 'नज़ीरी' नीशापुरी।

'सौदा' का आखिरी ज़माना था। लखनऊ के एक मुशायरे में सय्यद इंशा ने, जो उस समय नौजवान थे, ग़ज़ल पढ़ी जिसमें का एक शे'र था :—

गर नाज़नीं कहे से बुरा मानते हो तुम
मेरी तरफ़ ही देखिए मैं नाज़नीं सही

इससे पहले कि विषय और अभिव्यक्ति की मौलिकता पर उन्हें दाद मिलती मिर्ज़ा रफ़ी 'सौदा' मुस्कुराकर बोले, "दरीं चे शक" (इसमें क्या शक है)। मुशायरे की 'वाह वाह' 'ह: ह: ह:' में बदल गई। इंशा की तर्रारी धरी रह गई।

स्पष्ट था कि फक्कड़पन के जंगल के इस शेर के बुढ़ापे में भी इसके आगे 'इंशा' जैसे शोख़ तबीअ़त का कुलेलें करना ख़तरे से ख़ाली नहीं था।

डा० रामबाबू सक्सेना ने लिखा है : "मिर्ज़ा साहब ने हजो (व्यंग-उपहास) के पोथे के पोथे लिखकर रख दिए हैं। उन लोगों पर तो अवश्य खेद होता है जिनके हृदयों पर ये आरे चले होंगे, लेकिन हमारे लिए वह एक ऐसा सुरभित उद्यान छोड़ गये हैं जो सदैव के लिए हरा-भरा रहेगा। उनके व्यंगों में वह तेज़ी और चोट है जिससे वे व्यंग-उपहास का एक स्थायी भंडार बन गये हैं।"

मिर्ज़ा सौदा के एक शागिर्द ने अपने उस्ताद की इस विशेषता का कारण बताते हुए लिखा है :

की हजो हर-इक शख़्श की हरचन्द की उसने
पर इससे तरफ़ उसके न आयद[1] हुई तक़सीर[2]
है एक सबब यह कि वो ख़ुद आप मुग़ल था
और जितने बुज़ुर्ग उसके थे मुग़लों के थे वो पीर
और दूसरे मुग़लों की है ख़िलक़त[3] में तबख़्ख़ुर[4]
करते हैं सदा हिन्दियों को याद ब-तहक़ीर[5]

फ़ारसी में एक मिसरा है 'ख़ताए-बुज़ुर्गां गिरफ़्तन ख़तास्त' यानी बुज़ुर्गों की ग़लती पकड़ना भी अपराध है। अगर यह सही है तो मुझे भी कुछ नहीं कहना है। 'सौदा' ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को गालियां दीं तो भी ठीक किया और उन लोगों ने 'सौदा' पर कीचड़ उछाला तो वह भी ठीक किया। हम क्यों किसी को कुछ कहें।

किन्तु दुर्भाग्य से इतिहासकार का कर्तव्य किंचित कठोर हुआ करता है। उसके सामने बुज़ुर्गी और छोटेपन के सवाल नहीं आते। उसे तो नीर-क्षीर विवेचन करना ही पड़ता है। इस लिहाज़ से उस ज़माने की तो यह नैतिक कमज़ोरी माननी ही पड़ती है जबकि 'मीर' और 'सौदा' जैसे बुज़ुर्ग एक दूसरे पर भद्दी-भद्दी गालियों की बौछार करते थे और साधारण लोग इस थुक्का-फ़ज़ीहत में आनन्द प्राप्त करते थे। असली ताज्जुब तो उन आलोचकों पर होता है जो उसके बाद के सभ्यता और

१. लागू २. अपराध ३. स्वभाव ४. घमंड ५. घृणापूर्वक

सुरुचि के ज़माने देख चुके हैं—'दाग़' और 'अमीर' का प्रति-द्वन्द्विता के बावजूद प्रेम-व्यवहार देख चुके हैं—और फिर भी 'सौदा' की हजवों को सुरभित उद्यान कह सकते हैं। यह तो हम आगे देखेंगे कि उन निंदात्मक पद्यों का साहित्यिक मूल्य क्या है, लेकिन यह बात तो शुरू ही से गले से नीचे नहीं उतरती कि कुछ लोगों के दिल पर आरे चलाने वाली पंक्तियां औरों के स्थायी आनन्द का कारण बनें। व्यंग और कटाक्ष का यदि वह स्तर हो जो 'अकबर' इलाहाबादी ने क़ायम रखा है—यानी जिसमें कटुता न हो और जिस पर चोट की जाय वह भी हँस पड़े—तब तो कोई बात नहीं, वरना महज़ गाली-गलौज को तो गाली-गलौज ही कहा जायगा और इस पर अफ़सोस किया जाना चाहिए कि 'सौदा' जैसे प्रतिभाशाली कवि ने अपनी योग्यता का एक भाग कीचड़ उछालने ही में ख़र्च किया।

साथ ही उपर्युक्त पंक्तियों का यह मतलब भी नहीं है कि 'सौदा' में फक्कड़पन के सिवा कुछ न था। दरअस्ल उनकी काव्य-शक्ति का लोहा अभी तक सब मानते चले आए हैं, 'मीर' जैसे तुनुक-मिज़ाज शायर ने उन्हें अपनी बराबरी का माना है और 'सौदा' की रचनाएं खुद इस बात की गवाह हैं कि उनकी बेजा तारीफ़ नहीं की गई।

जीवन-वृत्त

मिर्ज़ा मुहम्मद रफ़ी 'सौदा' के बुज़ुर्ग काबुल के रहने वाले थे और सिपाही-पेशा थे। अच्छा इज्ज़तदार ख़ानदान था। उनके पिता मिर्ज़ा मुहम्मद शफ़ी ने व्यापार का धंधा अपनाया

और इसी सिलसिले में दिल्ली आए तो यहीं के हो रहे। पैसा ख़ूब कमाया और खानदान अच्छा ही था, चुनांचे उनका विवाह नेअ़मत खां आ़ली की पुत्री से हो गया। 'सौदा' उन्हीं के पेट से पैदा हुए। इनकी पैदायश की तिथि निश्चित रूप से कुछ नहीं कही जा सकती। किसी समकालीन रचना में इसका उल्लेख नहीं है। मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद 'आबे-हयात' में उनकी जन्म-तिथि ११२५ हि० (१७१४ ई०) लिखते हैं। 'गुले-रअ़ना' के लेखक मौलाना अब्दुल हई ने भी इस तिथि को ठीक माना है। डा० सक्सेना को इसमें सन्देह है। बहर-हाल उनकी जन्म-तिथि १७०६ ई० से लेकर १७१४ ई० तक ही हो सकती है।

मिर्ज़ा का लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में ही हुई। अमीर बाप के बेटे थे। जवानी बड़ी मस्ती से काटी। शायरी में पहले सुलैमान क़ुली खां 'विदाद' के और फिर शाह हातिम के शागिर्द हुए। शाह हातिम को उनकी उस्तादी पर गर्व था, अपने दीवान की भूमिका में शागिर्दों में सबसे पहले 'सौदा' का नाम लिया है। 'सौदा' की मृत्यु के समय शाह हातिम ज़िन्दा थे। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत रोए और कहा कि "हमारा पहलवाने-सुख़न मर गया।"

'सौदा' ने ख़ान आरज़ू की संगति से भी लाभ उठाया था। ख़ान आरज़ू अपने ज़माने के प्रमुख कवि थे ('मीर' के सौतेले मामूं भी होते थे लेकिन 'मीर' की उनसे नहीं पटी)। ख़ान आरज़ू के कहने से ही उन्होंने फ़ारसी छोड़कर उर्दू (रेख़्ता) में शायरी शुरू की हालांकि बीच-बीच में फ़ारसी में भी लिखते

रहे* । शीघ्र ही मिर्ज़ा की उर्दू कविता की शोहरत हो गई और तत्कालीन बादशाह शाह आलम भी, जो 'आफ़ताब' तख़ल्लुस करते थे, मिर्ज़ा के पास अपनी रचनाएं संशोधनार्थ भेजने लगे ।

लेकिन बादशाह से उनकी ज़्यादा दिन न पट सकी और इन्होंने दरबार में जाना छोड़ दिया । फिर भी दिल्ली में नवाबों, रईसों और क़द्रदानों की कमी न थी । 'सौदा' को सरपरस्त मिलते ही गये, उनकी प्रसिद्धि बढ़ती ही गयी । यहां तक कि अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने उन्हें राह-ख़र्च भेजा और फ़ैज़ाबाद आने का निमन्त्रण दिया (उस समय अवध की राजधानी फ़ैज़ाबाद थी ।) लेकिन 'सौदा' को दिल्ली छोड़ना मंज़ूर न हुआ—वहां उन्हें क्या कमी थी । वे बात को टाल गये और कहते हैं कि नवाब शुजाउद्दौला के निमन्त्रण के उत्तर में यह रुबाई लिख भेजी :—

'सौदा' पए-दुनिया[1] तू बहर-सू[2] कब तक
आवारा अज़ीं-कूचा-बआं-कू[3] कब तक
हासिल यही इस से न कि दुनिया होवे ?
बिल्फ़र्ज़ हुआ यूं भी तो फिर तू कब तक

लेकिन 'सौदा' का यह इत्मीनान बहुत दिन न चला । दिल्ली पर तबाही आयी । मरहठों ने दिल्ली पर हमला किया । चारों

* मौलाना अब्दुलबारी 'आसी' को इससे मतभेद नहीं किन्तु वे मिर्ज़ा की फ़ारसी रचनाओं को नौसिखियों की कविता से अधिक महत्व नहीं देते । मेरी समझ में उनकी फ़ारसी कविता भी काफ़ी ज़ोरदार है— 'कैफ़' ।

१. संसार के लिए २. हर तरफ़ को ३. इस गली से उस गली

ओर लूट-मार मच गयी, रईस तबाह हो गये। सहारा देने वाले न रहे तो गुणी-जन भी इधर-उधर बिखरने लगे।

'सौदा' ने दिल्ली में ठिकाना नहीं देखा और वहां से फ़र्रुखाबाद आ गये। फ़र्रुखाबाद में उस वक़्त नवाब अहमद खां बंगश की हुकूमत थी और मेह्रबान खां 'रिन्द' उनके प्रधान मन्त्री थे। मेह्रबान खां ख़ुद ज़्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन शायरों और विद्वानों के बड़े क़द्रदान थे। साथ ही वे मीर 'सोज़' के साथ 'सौदा' के भी शागिर्द हो गये। 'सौदा' ने कुछ साल बड़े इत्मीनान से फ़र्रुखाबाद में काटे। उन्होंने कई क़सीदे नवाब अहमद खां और मेह्रबान खां की तारीफ़ में कहे हैं। कहा जाता है कि फ़र्रुखाबाद में 'सौदा' लगभग साठ वर्ष की अवस्था में आये। यह भी ठीक से नहीं मालूम कि वे कितने दिन फ़र्रुखाबाद में रहे लेकिन यह सभी मानते हैं कि कई साल फ़र्रुखाबाद में रहे। इस पर सभी सहमत हैं कि वे ११८५ हि० में फ़र्रुखाबाद से फ़ैज़ाबाद पहुंचे। ११२५ हि० को उनका जन्म सम्वत माना जाय तो वे फ़र्रुखाबाद छोड़ने के समय साठ वर्ष के होंगे। फिर फ़र्रुखाबाद आने के समय साठ कैसे हो सकते हैं। डा० एजाज़ हुसैन ने उनके फ़र्रुखाबाद रहने का समय १७ वर्ष दिया है। इस लिहाज़ से वे ४३ वर्ष की अवस्था में फ़र्रुखाबाद पहुंचे होंगे। लेकिन एजाज़ साहब ने इस बात का कोई आधार नहीं बताया है और इस पर विश्वास करना कठिन है।

बहर-हाल ११८५ हि० (१७७१ ई०) में नवाब अहमद खां का देहावसान हो गया और वहां की व्यवस्था बिगड़ गयी।

'सौदा' अब उठे तो फ़ैज़ाबाद आकर अपने पुराने क़द्रदान नवाब शुजाउद्दौला के दरबार में रहने लगे।

मौलाना आज़ाद ने लिखा है कि शुजाउद्दौला ने 'सौदा' के दिल्ली से लखनऊ पहुंचने पर उनकी रुबाई की याद दिलायी और 'सौदा' फिर उस दरबार में न गए। किन्तु मौलाना आज़ाद ने अक्सर सच्चाई की जांच किये बग़ैर ही मज़ेदार क़िस्से लिख दिये हैं। उन्हीं में से यह भी एक है। 'सौदा' न दिल्ली से सीधे शुजाउद्दौला के पास पहुंचे, न शुजाउद्दौला लखनऊ में रहते थे और न कभी उनके दरबार में 'सौदा' ने जाना छोड़ा। शुजाउद्दौला की प्रशंसा में उन्होंने कई क़सीदे भी कहे हैं।

शुजाउद्दौला के मरने के बाद आसफ़ुद्दौला नवाब हुए। उन्होंने अपनी मां बहू बेगम के नियन्त्रण से घबराकर अपनी राजधानी फ़ैज़ाबाद से बदलकर लखनऊ कर ली। उस समय मिर्ज़ा 'सौदा' भी लखनऊ आ गये और अंत समय तक लखनऊ ही में रहे। उनकी इस समय के बड़े शायरों 'मसहफ़ी', 'मिन्नत' वग़ैरा की प्रतिस्पर्धा में ख़ूब शायरी चमकी। इसी ज़माने में उनकी एक अन्य फ़ारसी कवि फ़ाखिर मकीं से काव्य-कला के सम्बंध में काग़ज़ी लड़ाई छिड़ गयी। यह लड़ाई बड़े अनुचित स्तर पर उतर आयी किन्तु बाद में तत्कालीन युवराज सआदत अली खां ने मिर्ज़ा का पक्ष लिया। अब नवाब आसफ़ुद्दौला और भी मेहरबान हो गये। उन्होंने 'सौदा' को 'मलिकुश्शुअ़रा' (कवि-सम्राट) की उपाधि दी और ६ हज़ार रुपया सालाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया।

यह मिर्ज़ा के उत्थान का चरम-बिन्दु था, लेकिन उम्र ने ज़्यादा साथ न दिया। कुछ दिन बाद ही उनका ११९५ हि० (१७८१ ई० में) देहावसान हो गया। मृत्यु के समय उनकी अवस्था हिजरी हिसाब से सत्तर वर्ष और ईसवी हिसाब से ६७ वर्ष की थी। उनके मरने पर उनके समकालीनों और बाद के कवियों ने 'तारीख़ें' लिखीं जिनमें 'मसहफ़ी', क़मरुद्दीन 'मिन्नत', 'नासिख़', 'नस्साख़' आदि द्वारा कही गयी तारीख़ें मशहूर हैं।

मिर्ज़ा का स्वभाव

मिर्ज़ा 'सौदा' के बारे में मीर तक़ी 'मीर' अपने तज़किरे 'निकातुश्शुअ़रा' में लिखते हैं "जवानेस्त ख़ुश-ख़ुल्क़-ओ-ख़ुशख़ूए गर्म-जोश, यार बाश, शिगुफ़्ता-रूए' (मृदु और अच्छे स्वभाव का, उत्साह से मिलने वाला, मित्रों का साथ करने वाला और हंस-मुख जवान है)। इन कुछ शब्दों में मिर्ज़ा 'सौदा' के प्रकट स्वभाव का अच्छा चित्रण किया गया है। उनके दो प्रमुख समकालीन 'मीर' और 'दर्द' सूफ़ी फ़क़ीर ख़ानदानों से सम्बंधित थे और उनकी तबीयतों पर सूफ़ीवादी करुणा का रंग चढ़ा हुआ था। इसके विपरीत मिर्ज़ा 'सौदा' एक तो सिपाही-पेशा ख़ानदान में पैदा हुए थे और दूसरे बाप के कमाये हुए धन से बचपन से खेलने के आदी थे। उन्हें फ़क़ीरों की सोहबत कभी नसीब ही नहीं हुई थी। ख़ुद भी सामंत वर्ग के थे (नेअ़मत खां आली के नवासे ही थे) और साथ भी सामंत वर्ग के लोगों का रहा था। फलतः जीवन को उत्साह-पूर्वक और ऐशो-इशरत ही में बिताना जानते थे।

दिल्ली पर तबाही आयी तो ख़्वाजा मीर 'दर्द' भगवान

पर भरोसा किये वहीं बैठे रहे। 'मीर' ने दिल्ली छोड़ी लेकिन एक तो काफ़ी मुसीबतें उठाने के बाद छोड़ी दूसरे यह कि जिस-तिस के पास भी नहीं गये। दिल्ली से सीधे आसफ़ुद्दौला के दरबार में गये। फ़र्रुखाबाद में तत्कालीन रईस मुज़फ़्फ़र जंग ने उन्हें अपने यहां रोकना चाहा लेकिन वे न रुके। इसके विपरीत 'सौदा' ने इस फ़क़ीराना ऐंठ का कहीं सबूत नहीं दिया। कष्ट उठाने की उनकी प्रवृत्ति ही नहीं थी। दिल्ली पर तबाही आते ही वहां से चल दिये। फ़र्रुखाबाद में क़द्रदान के मरते ही वह दरवाज़ा भी छोड़ दिया और फ़ैज़ाबाद आ गये। दुनियादारी में यह उन दोनों से ज़्यादा आगे बढ़े हुए थे।

लेकिन यह सोचना ग़लत होगा कि उनमें आत्म-सम्मान की कमी थी। 'मीर' और 'दर्द' से उनका रवैया अलग रहा तो इस कारण कि ज़बर्दस्ती की फ़क़ीराना ज़िद उनमें नहीं थी। वरना कौन नहीं जानता कि शाह आलम के दरबार को छोड़ देना किसी ऐसे आदमी का काम नहीं था जिसमें आत्म-सम्मान की कमी हो। 'मसहफ़ी' अपने तज़किरे में उनके बारे में लिखते है: "हर जा कि मी रफ़्त इज़्ज़तो-हुरमते-तमाम मी याफ़्त। नव्वाबे-मरहूमो-मग़फ़ूर नीज़ बूदने-ओ-रा दर सरकारे-खुद बिसियार ग़नीमत मी दानिस्तंद" (वे जिस जगह भी जाते थे उनका पूरा सम्मान किया जाता था। स्वर्गीय नवाब—शुजा-उद्दौला—भी अपनी सरकार में उनका होना बहुत ग़नीमत समझते थे)। मेरी समझ में जिसमें आत्म-सम्मान काफ़ी मात्रा में नहीं होता वह दूसरे से भी सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता।

'सौदा' एक ओर तो बहुत मिलने-जुलने वाले और यार-

बाश आदमी थे, दूसरी ओर तुनुक-मिज़ाज भी बहुत थे। तुनुक-मिज़ाजी भी ऐसी नहीं कि बिगड़कर चुपचाप बैठ जायें। जिस पर बिगड़ते उसकी सात पुश्त की ख़बर ले डालते थे। 'आज़ाद' ने लिखा है कि उनका एक नौकर था जिसका नाम था ग़ुंचा। किसी पर नाराज़ होते तो कहते, "ग़ुंचा! लाना तो मेरा क़लमदान, ज़रा इसकी ख़बर लूं।" बस ग़ुंचा ने क़लमदान दिया नहीं कि सर-सर करके निन्दा के तीरों की बौछार कर दी। तबीयत में बला का ज़ोर था, हजवों में वह ज़ोर अपने पूरे जोबन पर आ जाता था। इस-इस पहलू से मार करते थे कि हाथों की सफ़ाई की दाद देनी पड़ती है और ऐसी-ऐसी जगह से बखिया उधेड़ते कि शर्म की आंखें भी नीची हो जायें। औरत, मर्द, लड़का, लड़की, बूढ़ा, बुढ़िया किसी के भी कपड़े उतारने से नहीं चूकते थे। और तो और बेज़बान और ना-समझ जानवरों घोड़ा, हाथी वग़ैरा को भी नहीं छोड़ा। क़सीदे, मसनवी, मुख़म्मस—ग़रज़ कि कोई काव्यांग ऐसा नहीं है जिस में हजवों के दरिया न बहा दिये हों।

लेकिन इस थुक्का-फ़ज़ीहत के बाद, जिसकी आवाज़ गूंज कर रह जाती थी, उनका दिल साफ़ हो जाता था। जिस आदमी के वे सबसे ज़्यादा पीछे पड़े वे मीर हसन के पिता मीरज़ा हक़ ख़ुद बहुत बड़े शायर थे और उनकी 'सौदा' से चोंचें चलती रहती थीं और दोनों एक दूसरे की ख़ूब धज्जियां उड़ाते रहते थे। जब मीरज़ा हक़ का देहांत हुआ तो 'सौदा' मातम-पुरसी के लिए गये और मीरज़ा हक़ के बारे में लिखी गयी सारी हजवें ले गये और उन्हें मीर हसन के सामने फाड़ दिया। मीर

हसन ने भी इस शराफ़त का जवाब शराफ़त से दिया और अपने पिता की 'सौदा' के विरुद्ध कही गयी सारी नज़्में नष्ट कर दीं। लेकिन भाग्य को क्या कहा जाय। 'सौदा' ने जो कुछ कहा था वह बच्चे-बच्चे की ज़बान पर चढ़ा था और तत्कालीन जन-रुचि ने उसे नष्ट नहीं होने दिया। लेकिन मीरज़ा हक़ की नज़्में किसी को याद न थीं और वह उनके साथ ही ख़त्म हो गयीं। बहर-हाल सौदा का चरित्र तो इससे स्पष्ट हो गया।

इसी तरह अपने विरोधियों को वे अपने क़लम के अलावा और किसी तरह की सज़ा दिलवाना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझते थे। उनके समकालीन फ़ाख़िर मकीं ने फ़ारसी के पुराने उस्तादों पर कुछ आपत्तियां की थीं। 'सौदा' ने उनके जवाब में एक पुस्तक 'रिसाला इबरतुल-ग़ाफ़लीन' लिखा। यह पुस्तक काफ़ी मशहूर हो गयी। फ़ाख़िर मकीं ने बहुत हाथ-पांव मारे लेकिन 'सौदा' से पार न पा सके। अंत में उन्होंने या उनके किसी ख़ैरख़्वाह ने कुछ गुंडे भेजे। गुंडों ने 'सौदा' के सीने पर कटार रख दी और कहा कि अपनी पुस्तक लेकर फ़ाख़िर मकीं के पास चलो। बेचारे मजबूरी में चले जाते थे कि रास्ते में युवराज सआदत अली खां की सवारी मिली। उन्हें देखकर गुंडे भाग गये। सआदत अली खां 'सौदा' को अपने यहां ले गये। नवाब आसफ़ुद्दौला को खबर लगी तो आग हो गये और हुक्म दिया कि फ़ाख़िर मकीं और उनके रिश्तेदारों के घर खुदवा दिये जायें। अब वे लोग 'सौदा' के पास आये और माफ़ी मांगी। 'सौदा' ने उन्हें माफ़ कर दिया और नवाब से निवेदन किया कि यह हम लोगों की क़लमी लड़ाई है, मैं

अकेला उनसे निबटने को काफ़ी हूं, आप अपना हुक्म वापस ले लें और उन लोगों को माफ़ कर दें। इस प्रकार यह रंजिश मिटी।

स्पष्ट है कि 'सौदा' की ज़बान जितनी ज़हरीली थी हृदय उतना ही विशाल था और वे सच्चे अर्थों में बड़े शायर ही नहीं बड़े आदमी भी थे।

'सौदा' का काव्य

'सौदा' बहुत लिखने वाले थे और हर काव्यांग में ज़ोर आज़माई करते थे। उनके कुल्लियात में ग़ज़लें, क़सीदे, हजवें (निन्दात्मक कविताएं), तज़मोन और गिरह-बंद (दूसरों की ग़ज़लों में अपने मिसरे बढ़ाकर रची गयी लम्बी कविताएं), रुबाइयां, बधाइयां और तारीखें, पहेलियां, वासोख़्त, प्राकृतिक चित्रण, नैतिक पद्य, मसनवियां, फ़ारसी दीवान, सलाम और मर्सिए आदि सभी कुछ हैं। कुछ साहित्यिक बहसें भी उसमें शामिल हैं। डा० सक्सेना ने विभिन्न तज़किरों के आधार पर उनकी तीन रचनाएँ और बतायो हैं जो कुल्लियात में शामिल नहीं हैं—(१) 'मीर' की रचनाओं पर कविताएं और 'मीर' के नाम दो पत्र, एक पद्य में और एक गद्य में, (२) 'मीर' की प्रसिद्ध मसनवी 'शोलए-इश्क़' का अनुवाद गद्य में, और (३) उर्दू-कवियों का एक तज़किरा जो अब कहीं नहीं मिलता।

आज़ाद का यह कहना बिल्कुल सही है कि "वह ऐसी तबीअ़त लेकर आये थे जो शे'र और फ़न्ने-इन्शा (काव्य-रचना) ही के वास्ते पैदा हुई थी…उनका कलाम कहता है कि दिल का कंवल हर वक़्त खिला रहता था। इस पर सब रंगों में हम-रंग और

हर रंग में अपनी तरंग। जब देखो तबीअत शोरिश में भरी और ज़ोशो-ख़रोश से लबरेज़। नज़्म की हर फ़रअ़ (शाखा) में तबअ़-आज़माई (रचना) की है और कहीं रुके नहीं।"

फिर भी 'सौदा' को मशहूर उनके दो काव्यांगों—हजो और क़सीदा—ने किया। हजवों की लोक-प्रियता ज़माने की रुचि के अनुसार थी। उनमें उनकी तारीफ़ इसलिए हुई कि जब गाली देने पर आते थे तो देते ही चले जाते थे—जोश कम ही न होता था। निन्दा के पात्र ही की ख़बर नहीं लेते थे बल्कि उसकी निरपराध पत्नी और पुत्री को भी समेट लेते थे। अश्लीलता से भी नहीं चूकते थे। मेरे कालेज जीवन में मेरे कुछ अलमस्त साथी गालियों की प्रतियोगिता किया करते थे और जो साहब गालियों के 'चैम्पियन' थे वे लगातार पांच मिनट तक बग़ैर किसी शब्द को दुहराये गालियां देते चले जाते थे। 'सौदा' की हजवों को उन 'चैम्पियन' साहब से ज़्यादा महत्व नहीं दिया जा सकता और इससे ज़्यादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। उनकी कुछ हजवों में स्विफ़्ट की तरह सुधारवादी पहलू भी निकाला जा सकता है लेकिन कुल-मिलाकर उन्हें गाली-गलौज ही कहा जाएगा।

लेकिन क़सीदे के क्षेत्र में उनकी जो प्रशंसा हुई है वह बिल्कुल ठीक हुई है। यद्यपि अ़रबी क़सीदों की तरह फ़ारसी और उर्दू क़सीदों का वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता और वे प्रशंसा-पात्र के वास्तविक गुणों के परिचायक नहीं होते (धार्मिक क़सीदे इस नियम के अपवाद हैं), तथापि वे काव्य-कला की परख की अच्छी कसौटी होते हैं। इसकी मिसाल

ऐसे ही दी जा सकती है जैसे दंगल या रेसों में उद्देश्य किसी को दबाकर रखना या किसी काम को जल्दी से करने के लिए दौड़ना नहीं होता—यानी उनका कोई कार्यात्मक पहलू नहीं है—फिर भी उनके महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। खेद है कि क़सीदा-गोई उन्नीसवीं शताब्दी के बाद समाप्त हो गयी और इस तरह काव्य-प्रतियोगिता का एक बड़ा क्षेत्र हाथ से जाता रहा।

क़सीदे के शे'रों का रूप तो ग़ज़लों ही की तरह होता है लेकिन दो-तीन बातों में वह मौलिक-रूप से ग़ज़लों से अलग होता है। एक तो यह कि वह धारावाहिक पद्य होता है, ग़ज़ल की तरह शे'र एक दूसरे से असम्बद्ध नहीं होते। दूसरी बात यह है कि उसका उद्देश्य किसी की प्रशंसा करना होता है और ज़ोर-दार शब्दों में प्रशंसा करना होता है, जबकि ग़ज़ल में कोमल शब्दों के द्वारा हृदय पर करुणा का प्रभाव डालने का प्रयत्न किया जाता है। तीसरे यह कि क़सीदे बहुत लम्बे-लम्बे होते हैं। प्रशंसा भी प्रशंसा-पात्र के वास्तविक गुणों की नहीं होती, बल्कि परम्परागत होती है, और शायर का कमाल यह समझा जाता है कि वह केवल अभिव्यक्ति में मौलिकता दिखाये।

उर्दू में क़सीदों के शुरू करने वाले 'सौदा' ही हैं यह कहना अनुचित होगा। बाद के कवियों में प्रसिद्ध क़सीदा-गो 'इन्शा' और 'ज़ौक़' हुए हैं। 'ग़ालिब' ने भी बहुत क़सीदे कहे हैं लेकिन अधिकतर फ़ारसी में। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में रामपुर और हैदराबाद के दरबारी कवियों 'दाग़', 'जलाल', 'अमीर', 'मुनीर' आदि ने भी क़सीदे कहे हैं लेकिन यह क़सीदे

का ह्रास-काल था। दरअस्ल बाद वाले क़सीदा-गोयों में सिर्फ़ 'ज़ौक़' को 'सौदा' के मुक़ाबिले में रखा जा सकता है। लेकिन इस पर सभी आलोचक सहमत हैं कि 'ज़ौक़' के क़सीदों में बंदिश की चुस्ती और शब्दों की शान के बावजूद 'सौदा' के क़सीदों जैसी स्वाभाविकता और ज़ोर नहीं है। फिर भी 'अफ़सर' जैसे कुछ आलोचकों ने 'ज़ौक़' को बिल्कुल घटिया क़सीदा-गो कहकर ज़्यादती की है।

क़सीदे के चार अंग होते हैं—(१) तशबीब या भूमिका, (२) गुरेज़, यानी कौशल-पूर्वक भूमिका के विषय से (जो प्रशंसा से बिल्कुल असम्बद्ध होता है) प्रशंसा पर आना, (३) मदह, यानी प्रशंसा, और (४) दुआ, यानी प्रशंसा-पात्र को आशीर्वाद देकर क़सीदा खत्म करना। तशबीब में आमतौर पर बहार या प्रेम-व्यापार का उल्लेख होता है जिसके आधार पर उसे बहारिया या इश्क़िया तशबीब कहा जाता है।

'सौदा' के क़सीदों की विशेषता यह है कि विचारों की सूक्ष्मता और विषय की मौलिकता के क्षेत्र में वे फ़ारसी के कई क़सीदा-गोयों से भी आगे बढ़ गये हैं। मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी ने 'शेर-उलहिन्द' में 'सौदा' के क़सीदों की पांच विशेषताएं बताई हैं—(१) उन्होंने फ़ारसी के मशहूर क़सीदागोयों अनवरी, ख़ाक़ानी, उर्फ़ी आदि के क़सीदों की ज़मीन पर क़सीदे कहे हैं और उनका सफलता-पूर्वक मुक़ाबला किया है, (२) उन्होंने मुश्किल ज़मीनों (रदीफ़ क़ाफ़ियों) में अत्यंत सफलता-पूर्वक क़सीदे कहे हैं, (३) उन्होंने परम्परावादी बहारिया तशबीब के अलावा दूसरे विषयों पर भी तशबीबें रखी हैं, (४) क़सीदों

में वास्तविक स्थिति के चित्रण किये हैं, और (५) अत्यंत स्वाभाविक और सादे रूपकों और उपमाओं को लेकर क़सीदे में ज़ोर पैदा किया है। इसके अतिरिक्त क़सीदों में विद्वत्ता प्रदर्शन आदि भी अन्य क़सीदा-गोयों की तरह किया है। एक क़सीदा बे-नुक़्त (जिसमें कोई ऐसा अक्षर न हो जिसे उर्दू में लिखने पर नुक़्ता या बिन्दी लगती है) भी लिखा है।

क़सीदों के अलावा 'सौदा' का एक अन्य उल्लेखनीय काव्यांग मर्सिया भी है। 'सौदा' से पहले भी मर्सिये लिखे जाते थे, लेकिन उन्हें साहित्यिक-रूप 'सौदा' और 'मीर' के ज़माने ही में मिला। इसमें संदेह नहीं कि बाद में लखनऊ के मर्सिया-गोयों 'अनीस', 'दबीर' आदि के मर्सियों के आगे इन लोगों के मर्सिये हल्के पड़ गये। फिर भी यह कहा जा सकता है कि मर्सियों का वर्तमान रूप 'सौदा' ही के ज़माने में क़ायम हुआ। कम से कम इसमें सन्देह नहीं हो सकता कि 'सौदा' के मर्सियों में वास्तविक हृदयोद्गारों के साथ ही साहित्यिकता प्रचुर मात्रा में है। इसलिए उनके मर्सियों का साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से महत्व है।

'मीर' और 'मिर्ज़ा'

साधारणतः आलोचक ग़ज़ल और मसनवी के क्षेत्र में मिर्ज़ा 'सौदा' को 'मीर' से कम ठहराते हैं। मौलाना अब्दुल-बारी 'आसी' यह नहीं मानते। ख़ुद 'सौदा' को भी इस आलोचना का बोध था। इसीलिए उन्होंने एक ग़ज़ल के मक़तम् में कहा है :—

कहते हैं वो जो है 'सौदा' का क़सीदा ही ख़ूब
उनकी खिदमत में लिये मैं ये ग़ज़ल जाऊंगा

मौलाना आज़ाद ने कहा है कि 'मीर' और 'सौदा' के कलाम में फ़र्क़ 'आह' और 'वाह' का है। इसके सबूत में उन्होंने दोनों के एक ही विषय पर कहे गये शे'र दिये हैं। उदाहरण के लिए उनमें से कुछ यहां दिये जाते हैं :—

हमारे आगे तेरा जब किसी ने नाम लिया
दिले-सितम-ज़दा को हमने थाम-थाम लिया
—मीर

चमन में सुबह जो उस जंगजू का नाम लिया
सबा ने तेग़ का मौजे-रवां से काम लिया
—सौदा

रात तो सारी कटी सुनते परीशां-गोई
'मीर' जी कोई घड़ी तुम भी तो आराम करो
—मीर

'सौदा' तेरी फ़रियाद से आंखों में कटी रात
अब आयी सहर होने को टुक तू कहीं मर भी
—सौदा

इसमें कोई संदेह नहीं कि करुणा के क्षेत्र में 'मीर' का जो महत्व है वह सब से बढ़कर है। 'सौदा' तो 'सौदा', 'दर्द' तक अपने सारे तसव्वुफ़ के साथ 'मीर' का करुणा के क्षेत्र में मुक़ाबिला नहीं कर सके हैं। मौलाना 'आसी' ने 'सौदा' के कुछ शे'रों का हवाला देकर यह साबित करने की कोशिश की है कि 'सौदा' में भी करुणा की कमी नहीं थी। यह कोई नहीं

कहता कि 'सौदा' ने करुणा-पूर्ण शे'र सिरे से लिखे ही नहीं। लेकिन जब हम उर्दू और फ़ारसी ग़ज़ल की पृष्ठभूमि देखते हैं तो मालूम होता है कि साधारणतः कवि करुणा का जो अनुपात अपनी ग़ज़लों में रखते हैं उससे कहीं कम 'सौदा' ने अपनी ग़ज़लों में रखा है। वे इस मामले में साधारण कवियों के समकक्ष भी नहीं ठहरते, 'मीर' की तो बात ही क्या है।

इसमें भी कोई संदेह नहीं कि ग़ज़ल के लिए करुणा बहुत हद तक अपेक्षित है। ग़ज़ल की टेक्नीक में और परम्परा के साथ उल्लास और उत्साह को निभाना असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य है। 'दाग़' आदि उल्लासवादी कवियों को भी ग़ज़लों में असर पैदा करने के लिए विरह-वर्णन का सहारा लेना पड़ा है (जिसमें वे अपने वास्तविक प्रेम-व्यापारों के आधार पर सफल भी हुए हैं)। लेकिन 'सौदा' के यहां यह तत्व कम मिलता है। मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी ने इसके कारण ये बताये हैं—(१) उनकी जाति का मुग़ल होना जिससे उनके मिज़ाज में गर्व अत्यधिक था, (२) उनका रूपकों पर अत्यधिक निर्भर होना (३) अपने ज़माने की रविश के खिलाफ़ उनका बाल की खाल निकालना, जिससे प्रभाव कम हो जाता है, (४) उनकी बहिर्मुखी चेतना जिसके प्रभाव में आकर वे नख-शिख वर्णन करने लगते हैं, (५) उनकी तबीअत का किसी एक रंग पर न ठहरना और हर रंग में शे'र कहना, (६) उन का मुश्किल ज़मीनों में शे'र कहना, (७) दरबारदारी और सामंत वर्ग का साथ, (८) प्रेम का वास्तविक अनुभव न होना, (९) उनकी स्वाभाविक उत्फुल्लता। 'मीर' इन सब मामलों में

'सौदा' के बिल्कुल उल्टे हैं इसीलिए उनमें दर्दमंदी बहुत है।

इसके अलावा 'सौदा' की ग़ज़लों के 'मीर' तथा अन्य कवियों से कम समझे जाने का एक बहुत बड़ा कारण यह है कि 'सौदा' के काव्य में सूफ़ीवाद का प्रभाव लगभग नहीं के बराबर है। होता भी कहां से, उन्हें कभी तसव्वुफ़ से दिलचस्पी ही नहीं रही। उर्दू-काव्य का यह आध्यात्मिक आधार उसकी दृष्टि को एक बड़ी विशालता दे देता है। सांसारिक प्रेम जैसी मामूली और बुनियादी चीज़ भी इसके आधार पर सर्वव्यापी और तात्विक नज़र आने लगती है। दार्शनिकता की बातें इस पृष्ठ-भूमि में ख़ूब जमती हैं। इस तत्व का न होना 'सौदा' की बड़ी कमज़ोरी है।

फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि 'सौदा' की ग़ज़लों का कोई महत्व ही नहीं। उनमें अपनी विशेषताएं हैं जो उन्हें उर्दू का अत्यंत उत्कृष्ट साहित्य बना देती हैं। मेरे विचार से ये विशेषताएं निम्नलिखित हैं :—

(१) पहली बात तो यह है कि 'सौदा' की कला बड़ी परिष्कृत थी। वे सही शब्दों का चुनाव करते थे और उनको इस तरह तरतीब देते थे कि शे'र का प्रवाह, ओज और प्रभाव अत्यधिक बढ़ जाता था। अगर एक शब्द को निकालकर उसकी जगह कोई समानार्थी शब्द रख दिया जाय तो शे'र का मज़ा किरकिरा हो जाय। उदाहरणार्थ :—

बहना कुछ अपनी चश्म का दस्तूर हो गया
दी थी ख़ुदा ने आंख सो नासूर हो गया

◆ ◆ ◆

गुल फेंके हैं ग़ैरों की तरफ़ बल्कि समर भी
ऐ ख़ाना-बर-अंदाज़े-चमन कुछ तो इधर भी

◇ ◇ ◇

पैग़ाम्बर ने देर लगायी तो है वले
धड़के है दिल कि यह न कहे 'रात हो गयी'

(२) इसके अतिरिक्त 'सौदा' के विषयों की सादगी भी अक्सर देखने योग्य होती है, यद्यपि कभी-कभी वे बाल की खाल भी निकालने लगते हैं।

उनके ज़माने ही की यह ख़ासियत है और 'मीर' तथा 'दर्द' आदि कभी उलझन वाले शे'र नहीं कहते। लेकिन विषय की सरलता में 'सौदा' इन दोनों से इस मानी में बढ़ गये हैं कि उन्होंने तसव्वुफ़ के रंग में कभी शे'र नहीं कहे। चुनांचे कुछ शे'रों की सादगी देखिए :—

तेरा दिल मुझ से न्हीं मिलता मेरा दिल रह नहीं सकता
ग़रज़ ऐसी मुसीबत है कि मैं कुछ कह नहीं सकता

◇ ◇ ◇

दिल को तो हर तरह से दिलासा दिया करूं
आंखें जो मानती नहीं इसको मैं क्या करूं

◇ ◇ ◇

आशिक़ की भी कटती हैं क्या ख़ूब तरह रातें
दो-चार घड़ी रोना, दो-चार घड़ी बातें

(३) तीसरी बात यह है कि उनके पूर्ववर्ती कवियों ने ईहामगोई (दो अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग) बहुत बढ़ा दिया था। ईहामगोई का एक उदाहरण लीजिए :—

लाम नस्तालीक़ का है उस बुते-ख़ुशख़त की ज़ुल्फ़
हम तो काफ़िर हों अगर बंदे न हों इसलाम के

उर्दू का अक्षर 'लाम' घुंघराली लट की शक्ल का होता है। पहला मिसरा तो लगभग सादा है लेकिन दूसरे मिसरे के अंतिम तीन शब्दों को देखिए। उन्हें चाहे 'इस लाम के' पढ़िए चाहे 'इस्लाम के', दोनों तरह से कुछ न कुछ मतलब निकलता है।

लेकिन निस्संदेह इस शाब्दिक क़लाबाज़ी में कवित्व की हत्या हो जाती है। 'सौदा' ने नक़्क़ारे की चोट पर इस शाब्दिक खिलवाड़ को ख़त्म कर दिया। उनके शे'रों में अगर कहीं शब्द अनुरूपता आ भी गयी है तो अपवाद-स्वरूप। लेकिन खेद है कि उनके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के कवियों को इस अलंकार का फिर चस्का लगा और उनकी रचनाओं में ईहामगोई ने एक ख़ास जगह ले ली। आख़िरकार उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में 'दाग़' के ज़माने में इसकी जड़ें खोद कर रख दी गयीं और बीसवीं शताब्दी की कविता में तो इसे गुण की बजाय दोष समझा जाने लगा है। इस लिहाज़ से 'सौदा' और 'दर्द' का ऐतिहासिक स्थान हो जाता है। (याद रखना चाहिए कि 'मीर' इसके बड़े शौक़ीन थे।)

(४) इसी तरह उन्होंने अन्य अलंकारों से भी पीछा छुड़ाया है, उपमाओं और रूपकों का भी अपेक्षाकृत कम प्रयोग किया है और केवल बयान के ज़ोर पर स्थायी रूप से शे'रों का महत्व बढ़ाया है।

(५) किन्तु 'सौदा' अपने कवित्व के प्रदर्शन के लिए एक

और राह अपनाते हैं जिसे आज के ज़माने में कोई पसंद नहीं करता, किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में इसका बोल-बाला था और 'सौदा' की देखा-देखी सभी महाकवि इस मैदान में घोड़े दौड़ाते थे। यह है मुश्किल से मुश्किल रदीफ़-क़ाफ़ियों में शे'र कहना। निस्संदेह इसके लिए बड़ी प्रतिभा और अभ्यास की अपेक्षा होती थी लेकिन यह भी स्पष्ट है कि इसे केवल क़लाबाज़ी कहा जा सकता है। 'सौदा' के ऐसे दो शे'र देखिए :—

क़ातिल के दिल से आह न निकली हवस तमाम
ज़र्रा भी हम तड़पने न पाये कि बस तमाम

◇ ◇ ◇

देखा मैं नख़्ले-वादी-ए-ऐमन हर एक झाड़
रोड़ा है कौनसा जो नहीं तूर का पहाड़

भाषा-परिमार्जन

काव्य-कला के अलावा 'सौदा' की देन भाषा की साज-संवार के क्षेत्र में भी है। यूं तो प्रत्येक युग के महाकवियों ने भाषा को निरंतर परिमार्जित किया है और उसकी अभिव्यंजना-शक्ति बढ़ायी है, लेकिन 'सौदा' के ज़माने में जितनी प्रगति इस बारे में हुई उतनी 'नासिख़' और 'दाग़' के ज़मानों के अलावा और कहीं नहीं दिखायी देती। 'मीर' और 'सौदा' ही ने उर्दू (रेख़्ता) को परिमार्जित करके उसे साहित्य के लिए गौरव की चीज़ बनाया। 'सौदा' कहते हैं :—

कहे था रेख़्ता कहने को ऐब नादां भी
सो यूं कहा मैं कि दाना हुनर लगा कहने

बसाने-मेह्र ये रौशन है सारे आलम पर
जहां में जैसे कि मैं शे'रे-तर लगा कहने

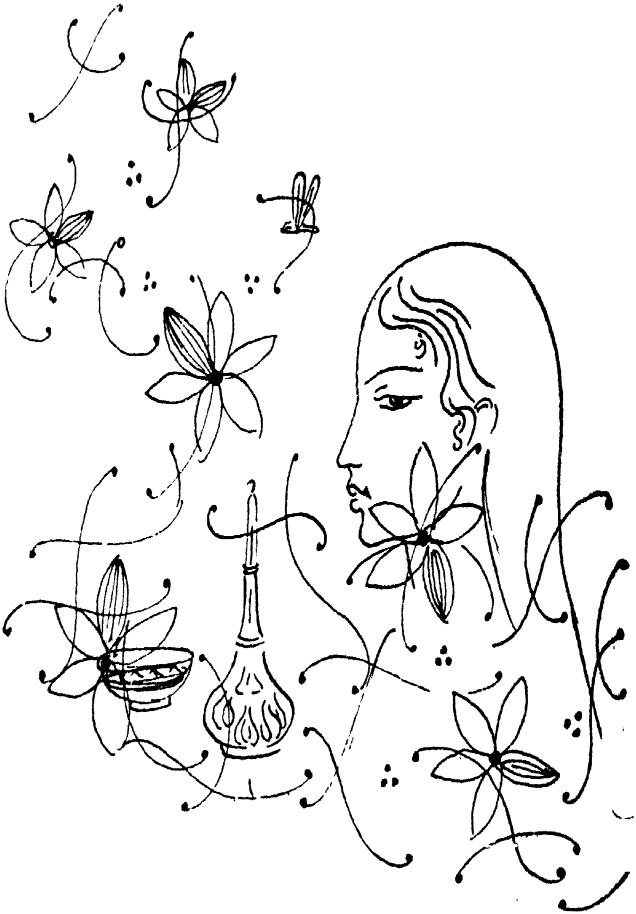
भाषा के मामले में उनकी देन निम्नलिखित है :—

(१) 'सौदा' से पहले हिन्दी के देशज शब्द अंधाधुंध प्रयुक्त होते थे। प्रियतम के लिए 'मोहन' 'साजन' आदि का प्रयोग बहुत होता था। 'सौदा' ने इनमें के बहुत से खड़खड़ाने वाले शब्द हटाकर फ़ारसी के मीठे शब्द प्रयोग किये। लेकिन साथ ही बहुत से चलताऊ देशज शब्द क़ायम रखे जैसे 'भुजबल' 'पर्वत' आदि। आगे चलकर 'नासिख़' ने इन शब्दों को भी निकाल दिया और साहित्यिक उर्दू में बहुत ही कम देशज शब्द रहने दिये। दरअस्ल 'सौदा' के समकालीनों में भी हिन्दी के शब्दों के प्रयोग में 'मीर' उनसे कहीं आगे बढ़े हुए नज़र आते हैं और उनसे कम फ़ारसी के शब्द इस्तेमाल करते हैं, लेकिन यह भी स्पष्ट है कि 'मीर' की भाषा उतनी परिमार्जित नहीं जितनी 'सौदा' की है। 'सौदा' के लाये हुए फ़ारसी शब्द उर्दू में लगभग सारे के सारे अभी तक क़ायम हैं और उनकी उत्कृष्ट चयन-शक्ति का परिचय देते हैं।

(२) 'मीर' की भांति 'सौदा' ने भी फ़ारसी के कुछ मुहावरों का उर्दू में अनुवाद कर दिया, यथा 'बू करदन' 'बू करना' (सूंघना)। इसके अलावा फ़ारसी की उपमाएं, रूपक, संकेत आदि भी वे अधिकाधिक उर्दू में लाये जो अभी तक उर्दू काव्य की नींव का काम दे रहे हैं। यह भी तय है कि फ़ारसी से अनूदित किये गये बहुत से मुहावरे 'सौदा' के बाद के कवियों ने छोड़ दिये लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि उर्दू

का वर्तमान रूप 'सौदा' ही का दिया हुआ है। इसका सबूत यह है कि 'सौदा' और उनके बाद के कवियों में शब्दों और प्रयोगों का जो साम्य मिलता है उतना 'सौदा' के पूर्ववर्ती कवियों और समकालीनों में नहीं मिलता।

फिर भी यह याद रखना चाहिए कि 'सौदा' दो शताब्दी पूर्व के कवि हैं और उनकी भाषा और प्रयोग आज से कुछ अलग हैं। 'ने' और 'के' के प्रयोगों में आज की भांति सुस्थिरता नहीं है, क्रिया भेदों में पुल्लिग और स्त्रीलिंग की इतनी सख्ती से पाबन्दी नहीं की जाती जैसे आज की जाती है, कुछ शब्द 'टुक', 'निपट', 'कने' आदि भी प्रयोग किये जाते हैं जो आज बहिष्कृत हो चुके हैं। उनकी कविता पढ़ते समय उनके समय की भाषा को अगर ध्यान में रखा जाय और उनके समकालीनों की भाषा से उनकी भाषा की तुलना की जाय तभी स्पष्ट होगा कि वे हमसे अपेक्षाकृत कितने नज़दीक थे।



ग़ज़ल

मक़दूर[1] नहीं उसकी तजल्ली[2] के बयां का
ज्यूं शमअ़ सरापा[3] हो अगर सर्फ़[4] ज़बां का
टुक देख सनम-खानए-इश्क़[5] आन के ऐ शैख
ज्यूं शमए-हरम[6] रंग झमकता है बुतां का
इस गुलशने हस्ती में अजब दीद है लेकिन
जब चश्म खुली गुल की तो मौसम है खिज़ां का
'सौदा' जो कभू गोश[7] से हिम्मत के सुने तू
मज़मून यही है जरसे - दिल[8] की फ़ुग़ां का
हस्ती से अ़दम[9] तक नफ़से-चन्द[10] की है राह
दुनिया से गुज़रना सफ़र ऐसा है कहां का

◇ ◇ ◇

गिला लिखूं में अगर तेरी बेवफ़ाई का
लहू में ग़र्क़[11] सफ़ीना[12] हो आशनाई का
ज़बां है शुक्र में क़ासिर[13] शिकस्ता-बाली[14] के
कि जिनने दिल से मिटाया ख़लिश रिहाई का
दिखाऊंगा तुझे ज़ाहिद उस आफ़ते-जां को
खलल दिमाग़ में तेरे है पारसाई[15] का

◇ ◇ ◇

१. शक्ति २. ज्योति ३. सर से पांव तक ४. व्यय ५. प्रेम-रूपी मंदिर ६. काबे की मोमबत्ती ७. कान ८. दिल-रूपी घंटा ९. अस्तित्व-हीनता १०. कुछ सांसों ११. डूबा १२. नाव १३. अशक्त १४. पंख टूटना १५. पवित्रता

दामन सबा न छू सके जिस शहसवार का
पहुंचे कब उसको हाथ हमारे ग़ुबार का
मौजे-नसीम[१] आज है आलूदा[२] गर्द से
दिल ख़ाक हो गया है किसी बेक़रार का
'सौदा' शराबे - इश्क़ न कहते थे हम न पी
आख़िर मज़ा न पाया अब उसके ख़ुमार का

◇ ◇ ◇

टूटे तेरी निगह से अगर दिल हुबाब[३] का
पानी भी फिर पियें तो मज़ा हो शराब का
दोज़ख़ मुझे क़बूल है ऐ मुनकिरो - नकीर[४]
लेकिन नहीं दिमाग़ सवालो-जवाब का
था किसके दिलको कशमकशे-इश्क़ का दिमाग़
यारब ! बुरा हो दीदए-ख़ाना-ख़राब[५] का
'सौदा' निगाहे-दीदए-तहक़ीक़[६] के हुज़ूर[७]
जल्वा हर एक ज़र्रे में है आफ़ताब का

◇ ◇ ◇

हर मिज़ा[८] पर है तेरे लख़्ते - दिल[९] इस रंजूर का
ख़ून है सो दार[१०] पर साबित मेरे मंसूर का
पोंछते ही पोंछते गुज़र है मुझको रोज़ो-शब[११]
चश्म है यारब ! मेरी या मुंह किसी नासूर का

१. हवा की लहर २. अटी हुई ३. बुलबुला ४. दो फ़रिश्तों के नाम जो क़ब्र में आकर मुर्दों के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा करते हैं ५. अभागी आंख ६. सत्य देखने वाली आंख ७. सामने ८. बरौनी ९. दिल का टुकड़ा १०. सूली ११. रात-दिन

क्या करूंगा लेके वाइज़ हाथ से हूरों के जाम
हूं मैं साग़र-कश किसी की नरगिसे-मख़मूर का
किसक़दर बिन्तुल-अ़नब[१] से दिल है 'सौदा' का बुरा
ज़ख्म ने दिल के न देखा मुंह कभी अंगूर का

◇ ◇ ◇

जी मेरा मुझसे ये कहता है कि टल जाऊंगा
हाथ से दिल के तेरे अब मैं निकल जाऊंगा
क़तरए - अश्क हूं, प्यारे, मेरे नज़्ज़ारे से—
क्यों ख़फ़ा होते हो ? पल मारते ढल जाऊंगा
छेड़ मत बादे-बहारी[२], कि मैं ज्यूं नकहते-गुल[३]
फाड़कर कपड़े अभी घर से निकल जाऊंगा
साहिले-बह्रे-जहां[४] पर हूं कि ज्यूं हेज़मे-ख़ुश्क[५]
डूबा पानी में न, तो आग में जल जाऊंगा
कहते हैं वह जो है 'सौदा' का क़सीदा ही ख़ूब
उनकी ख़िदमत में लिये मैं ये ग़ज़ल जाऊंगा

◇ ◇ ◇

दिल मत पटक नज़र से कि पाया न जायेगा
ज्यूं अश्क फिर ज़मीं से उठाया न जायेगा
रुख़सत[६] है बाग़बां कि टुकेक[७] देख लें चमन?
जाते हैं वां जहां से फिर आया न जायेगा
काबा अगर्चे टूटा तो क्या जाए-ग़म है शैख़
कुछ क़स्रे-दिल नहीं कि बनाया न जायेगा

---

१. अंगूर की बेटी (शराब) २. बहार की हवा ३. फूल की गंध
४. संसार-सागर के तट पर ५. सूखी लकड़ी ६. अनुमति ७. थोड़ा-सा

ज़ालिम मैं कह रहा था कि इस ख़ूं से दरगुज़र
'सौदा' का क़त्ल है ये छुपाया न जायेगा

◇ ◇ ◇

क़त्ल से मेरे अबस क़ातिल फिरा
उसने मुंह फेरा हमारा दिल फिरा
उठ गया दिल का मेरे अब एतबार
यह तो ख़ूबां[१] से जहां के मिल फिरा
बैठ रह 'सौदा' तसल्ली दिल को दे
दर-ब-दर मिन्नत से क्या हासिल फिरा

◇ ◇ ◇

फिरे है शैख़ यह कहता कि मैं दुनिया से मुंह मोड़ा
इलाही इन ने अब दाढ़ी सिवा किस चीज़ को छोड़ा
तपिश ने इन दिनों दिल की नयी सूरत निकाली है
लपकता है पड़ा रातों को यूँ पकता है ज्यूं फोड़ा
सबा से हर सहर मुझको लहू की बास आती है
चमन में आह गुलचीं ने ये किस बुलबुल का दिल तोड़ा
न मिल कम-ज़र्फ़ से हर्गिज़ बक़ौले-'आबरू' 'सौदा'
किसे बर्दाश्त है नाहक़ उठावे कौन नक-तोड़ा

◇ ◇ ◇

जो गुज़री मुझपे, मत उससे कहो, हुआ सो हुआ
बला-कशाने-मुहब्बत[२] पे जो हुआ सो हुआ
मुबादा[३] हो कोई ज़ालिम तेरा गिरेबां-गीर[४]
मेरे लहू को तो दामन से धो, हुआ सो हुआ

१. सुंदरियों २. प्रेम के दुखियारे ३. ऐसा न हो ४. पकड़ने वाला

ये कौन हाल है अहवाले - दिल पे ऐ आंखो
न फूट-फूट के इतना बहो, हुआ सो हुआ
दिया उसे दिलो-दीं अब ये हाल है 'सौदा'
फिर आगे देखिए जो हो सो हो, हुआ सो हुआ

◇ ◇ ◇

तुझ क़ैद से दिल होकर आज़ाद बहुत रोया
लज़्ज़त को असीरी की कर याद बहुत रोया
तस्वीर मेरी तुझ बिन मानी[१] ने जो खेंची थी
अंदाज़ समझ उसका बहज़ाद[२] बहुत रोया
नाले[३] ने तेरे बुलबुल नम चश्म न की गुल[४] की
फ़रियाद मेरी सुनकर सय्याद[५] बहुत रोया
सौदा' से ये पूछा मैं, दिल में भी किसी को दूं
वह करके बयां अपना रूदाद[६] बहुत रोया

◇ ◇ ◇

तरकश उलेंड सीना आलम का छान मारा
मिज़गां[७] के बान ने तो अर्जुन का बान मारा
कहते हैं इश्क़ जिसको मत पूछ ही वो क्या है
इक ज़हर है कि जिन ने पीरो-जवान[८] मारा
मेहमां जो कोई आया घर आसमां दनी[९] के
दो दिन खिला के रोटी उसको निदान मारा

१, २. मानी और बहज़ाद ईरान के प्रसिद्ध चित्रकार थे ३. रोना ४. फूल ५. शिकारी (प्रियतम) ६. कहानी ७. बरौनियां ८. जवान और बूढ़ा ९. नालायक़

'सौदा' को बात करते तुझसे कभू न देखा
कह किस गुनह पे तूने वह बेज़बान मारा

◇ ◇

सहर जो बाग़ में दिलदार एक बार आया
निसार मेवे से हर नख़्ले-ज़ेर-बार[१] आया
क़सम न खाइए मिलने की ग़ैर से हरगिज़
कहा न तुमने मियां हमको एतबार आया
बरंगे-आईना हम और सीना-साफ़ हुए
जो अपने दिल पे किसी शक्ल से ग़ुबार आया
ख़बर ले वादी[२] में 'सौदा' की यूं सुना है आज
कि एक शोख़ किसी बेगुनह को मार आया

◇ ◇ ◇

आदम[३] का जिस्म जबकि अनासिर[४] से मिल बना
कुछ आग बच रही थी सो आशिक़ का दिल बना
जब तेशा[५] कोहकन[६] ने लिया हाथ तब ये इश्क़
बोला कि अपनी छाती पे धरने को सिल बना
अपना हुनर दिखावेंगे हम तुझको शीशागर[७]
टूटा हुआ किसी का अगर हम से दिल बना

◇ ◇ ◇

इश्क़ था या क्या था जिससे दिल अटकता ही रहा
ख़ार-सा[८] सीने में मेरे कुछ खटकता ही रहा

---

१. झुका हुआ पेड़ २. घाटी ३. मनुष्य ४. तत्त्व ५. पत्थर काटने का औज़ार ६. फ़रहाद ७. शीशे का कारीगर ८. कांटा-सा

ताब किसको है कि तेरे दर से आगे जा सके
जो तेरे कूचे में आया सर पटकता ही रहा
यार घर आया था पर देखा न उसको भर नज़र
होश में आऊं मैं जब तक वह सटकता ही रहा
आज क्या 'सौदा' मैं उल्फ़त की ख़लिश तुझसे कहूं
ख़ार-सा सीने में मेरे कुछ खटकता ही रहा

◇ ◇ ◇

चेहरे पे न यह नक़ाब देखा
पर्दे में था आफ़ताब देखा
कुछ मैं ही नहीं हूं, एक आलम
उसके लिए यां ख़राब देखा
कुछ होवे तो हो अदम[१] में राहत
हस्ती में तो हम अज़ाब[२] देखा
जिस चश्म[३] ने मुझ तरफ़ नज़र की
उस चश्म को मैं पुर-आब[४] देखा
भूला है वो दिल से लुत्फ़ उसके
'सौदा' ने ये जब अताब[५] देखा

◇ ◇ ◇

तेरा दिल मुझसे न्हीं[६] मिलता मेरा जी रह नहीं सकता
ग़रज़ ऐसी मुसीबत है कि मैं कुछ कह नहीं सकता
तेरे आगे मेरी आंखों से आंसू क्योंकि चलते हैं
जो तू दरिया से गुज़रे है तो पानी बह नहीं सकता

◇ ◇ ◇

१. अस्तित्व-हीनता २. दुख ३. आंख ४. तर ५. कोप ६. नहीं

हाले-दिल से मेरे जब तक वो ख़बरदार न था
जुज़[१] दमे-सर्द[२] कोई महरमे-असरार[३] न था
जो अमल[४] चाहिए कीजे मेरे दुख देने का
वह न कीजे कि कहे कोई "सज़ावार[५] न था"
शब[६] तेरी बज़्म में 'सौदा' को मैं देखा जब तक
कुछ खमोशी के सिवा उसको सरोकार न था

◇ ◇ ◇

इश्क़ की ख़िलक़त[७] के आगे मैं तेरा दीवाना था
संग[८] में आतश थी जब तू शमअ़ में परवाना था
जुज़-व-कुल[९] में फ़र्क़ इतना ही फ़क़त है एतक़ाद[१०]
वर्ना जिस ख़िरमन[११] को देखा फ़िल-हक़ीक़त[१२] दाना था
जोने देने की नहीं याद उस ज़माने की कि जब
नाला[१३] अपना वक़्ते-शब[१४] उसके लिए अफ़साना[१५] था
इस चमन में जब तलक हम नश्शए-मस्ती में थे
उम्र अपनी का पुर-अज़-ख़ूने-जिगर[१६] पैमाना था

◇ ◇ ◇

पहलू से मेरे सुब्ह वो दिलदार उठ गया
रोज़े-विसाल करके शबे-तार[१७] उठ गया
आहो-फ़ुग़ां की आज जो आती नहीं सदा[१८]
शायद तेरा जहान से बीमार उठ गया

१. सिवा २. ठंडी सांस ३. भेद जानने वाला ४. काम ५. लायक़ ६. रात ७. जन्म ८. पत्थर ९. अंश और पूर्ण १०. विश्वास ११. खलिहान १२. वास्तव में १३. रुदन १४. रात के समय १५. कहानी १६. कलेजे के ख़ून से भरा १७. अंधेरी रात १८. आवाज़

गैरों को देख बज़्म में बैठे हुए तेरी
जब कुछ न बस चला तो मैं नाचार उठ गया
वादे से फेर देने के दिल ले गया था शोख़
'सौदा' ने जबकि मांगा, कर इन्कार उठ गया

◇ ◇ ◇

दिल में तेरे जो कोई घर कर गया
सख़्त मुहिम थी कि वो सर कर गया
देख ली साक़ी की भी दरिया - दिली
लब न हमारे कभू तर कर गया
नफ़ा को पहुंचा ये तुझे दे के दिल
जान का अपनी मैं ज़रर कर गया

◇ ◇ ◇

बहना कुछ अपनी चश्म का दस्तूर हो गया
दी थी ख़ुदा ने आंख पै नासूर हो गया
ख़ुश हैं शिकस्ता-बाली[1] पै हम अपनी इसलिए
परवाज़[2] का तो दिल से ख़लिश[3] दूर हो गया
जा ही भिड़ा था उस सफ़े-मिज़गां[4] से दिल मेरा
पर ज़ख़्म यह उठाये कि बस चूर हो गया
'सौदा' को कहते हैं कि है उससे मुसाहिबत[5]
कितना ग़लत ये हर्फ़ भी मशहूर हो गया

◇ ◇ ◇

---

१. पंख टूटना २. उड़ना ३. खटक ४. बरौनियों की पंक्ति
५. साथ

अपने का है गुनाह बेगाने ने क्या किया
इस दिल को क्या कहूं कि दिवाने ने क्या किया
आँखों की रहबरी[1] ने कहूं क्या कि दिल के साथ
कूचे की उसके राह बताने ने क्या किया
काम आयी कोहकन[2] की मशक़्क़त न इश्क़ में
पत्थर से जूए-शीर[3] के लाने ने क्या किया
चाहूं मैं किस तमअ़[4] पे ज़माने की दोस्ती
औरों से दोस्त होके ज़माने ने क्या किया
'सौदा' है बेतरह का नशा जामे-इश्क़ में
देखा कि उसको मुंह के लगाने ने क्या किया

◇ ◇ ◇

दीनो-कुफ़्र आंखों ने तेरी कर दिया ऐ यार मस्त
साहबे - तस्बीह[5] मस्त और साहबे - ज़ुन्नार[6] मस्त
चश्मो - अबरू[7] को तेरे यूं देखकर कहती है ख़ल्क़[8]
तुल रहे हैं खेंच कर आपस में दो तलवार मस्त
चाहती हैं दम-ब-दम यूं ख़ूने-दिल आंखें तेरी
बादए - गुलरंग[9] को मांगे हैं ज्यूं हर बार मस्त
सच तो कह किस मैकदे[10] में आज 'सौदा' पी है मै
देखकर मस्ती को तेरी हो गये हुशियार मस्त

◇ ◇ ◇

---

१. पथ-प्रदर्शन २. फ़रहाद ३. दूध की नहर ४. लालच
५. तसबीह वाले (मुसलमान) ६. जनेऊ वाले (हिन्दू) ७. आंख और भौं
८. दुनिया ९. लाल शराब १०. मदिरालय

हिन्दू हैं बुत-परस्त मुसलमां ख़ुदा-परस्त
पूजूं मैं उस-किसी को जो हो आशना-परस्त[1]
देखा है जब से रंगे-कफ़क[2] तेरे पांव में
आतश को छोड़ गब्र[3] हुए हैं हिना-परस्त
'सौदा' से शख़्स के तईं आज़ुर्दा[4] कीजिये
ऐ ख़ुद-परस्त, हैफ़ ![5] नहीं तू वफ़ा-परस्त

◇ ◇ ◇

नज़र आजाये है जैसी कि हिन्दुस्तान में सूरत
कभू काहे को ख़ल्क़[6] ऐसी हुई कनआन[7] में सूरत
ज़ुलेखा से कहो टुक दीदए-तहक़ीक़[8] को खोले
बिह-अज़-यूसुफ़[9] नज़र आयेगी हर इन्सान में सूरत
तेरा दिल क्यों न मेरे ख़ून का प्यासा हो ऐ ज़ालिम
मिली है इसको तेरे तीर के पैकान[10] की सूरत
ज़माने को कोई 'सौदा' भला किस तरह पहचाने
कि इस ज़ालिम की कुछ से कुछ है हर इक आन में सूरत

◇ ◇ ◇

माने है किसे वाक़िफ़े-असरारे-मुहब्बत[11]
पूजे न ख़ुदाई को परस्तारे - मुहब्बत[12]

१. प्रियतम का पूजने वाला २. तलवों का रंग ३. अग्नि-पूजक ४. दुखी ५. अफ़सोस ६. पैदा ७. यूसुफ़ की जन्म-भूमि ८. खोजने वाली आंख ९. यूसुफ़ से अच्छी १०. नोक ११. प्रेम के रहस्य का जानकर १२. प्रेम का पुजारी

आतश है तेरी गर्मिए - बाज़ारे - मुहब्बत
क्या लेगा बजुज़[1] दाग़ ख़रीदारे - मुहब्बत
करते हैं असीरे - क़फ़सो - दाम[2] भी फ़रियाद
ले सकते नहीं सांस गिरफ़्तारे - मुहब्बत
दावा मेरी सेहत पे मसीहा को ग़लत है
बचते ही न देखा कोई बीमारे-मुहब्बत
बातों से कुछ अपनी नहीं तेरा गिला मंज़ूर
शिकवे[3] से मज़ा देती है गुफ़्तारे - मुहब्बत

◇ ◇ ◇

तुझ बिन बहुत ही कटती है औक़ात[4] बेतरह
ज्यूं-त्यूं कि दिन तो गुज़रे है पर रात बेतरह
बुलबुल कर इस चमन में समझ कर टुक आशियां[5]
सय्याद[6] लग रहा है तेरी घात बेतरह
पूछा पयाम्बर[7] से जो मैं यार का जवाब
कहने लगा, "ख़मोश, कि है बात बेतरह"
'सौदा' न मिल, कर अपनी तू अब ज़िन्दगी पे रहम
है उस जवां की तर्ज़े - मुलाक़ात बेतरह

◇ ◇ ◇

हुआ है दाग़ मेरा दिल अनार के मानिंद
झड़े है आंख से आंसू शरार[8] के मानिंद
नहीं है सैर का कुछ लुत्फ़ बाग़ में तनहा
बग़ैर यार रगे-गुल है ख़ार के मानिंद

१. सिवा २. पिंजड़े और जाल के क़ैदी ३. शिकायत ४. समय
५. घोंसला ६. शिकारी ७. संदेह-वाहक ८. चिंगारी

ख़बर नहीं है मुझे तुर्क चश्म ने किसके
लिया है लूट मेरा दिल दियार[1] के मानिंद
हुई है उम्र कि हम लग रहे हैं दामन से
झटक न दीजियो प्यारे ग़ुबार के मानिंद
हुआ है रश्के-चमन[2] चेहरा यार का 'सौदा'
ख़त[3] उसके गिर्द जो आया बहार के मानिंद

◇ ◇ ◇

मुझ साथ तेरी दोस्ती जब हो गयी आख़िर
दुनिया की मेरे दिल से तलब हो गयी आख़िर[4]
हासिल तो हुआ वस्ल हमें रात, पर अफ़सोस
इक पल में शबे-ऐशो-तरब[5] हो गयी आख़िर
शौकत ने हमें हुस्न की कहने न दिया कुछ
बात आन के सौ बार ब-लब हो गयी आख़िर
मुठभेड़ ही 'सौदा' से ये कल हो जो गयी शेख़
शेख़ी थी जो कुछ उनमें वो सब हो गयी आख़िर

◇ ◇ ◇

समन्दर कर दिया नाम उसका नाहक़ सबने कह-कह कर
हुए थे जमअ़ कुछ आंसू मेरी आंखों से बह-बह कर
दिमाग़ आशुफ़्ता[6] यां होता है गुंचे के चटकने से
चमन में हम से ऐ बुलबुल परे टुक जाके चह-चह कर
सिपाही, मार कर मरतों को, कब प्यारे कहाओगे
अबस घूरो हो मुझको क़ब्ज़ए-शमशीर[7] गह-गह कर

१. शहर २. बाग़ से बढ़कर ३. गालों के रोएं ४. ख़त्म
५. सुख-ऐश्वर्य की रात ६. परेशान ७. तलवार की मूठ

तू मेरी आंखों में है हूरो-बशर से बेहतर
यार है हुस्न तेरा शम्सो-क़मर[1] से बेहतर
दिले-उश्शाक़[2] है पहलू में जवाहर-ख़ाना
अश्के-ख़ूनी है मेरा लालो-गुहर से बेहतर
आशियां से न उड़े पहुंचे न हम दाम[3] तलक
हम तो बे-बालो-परी समझे हैं पर से बेहतर

◇ ◇ ◇

काम आया न कुछ अपना तने-ज़ार आख़िरकार
समझे अक्सीर थे निकला ये ग़ुबार आख़िरकार
बाग़बां था तुझे दो दिन की हवा पर ये ग़रूर
न रहे बाग़ में गुल, रह गए ख़ार आख़िरकार
ज्यूं वो परवाना जिसे शमअ़ से हो सुब्ह को वस्ल
गर्म हमसे जो हुई सोहबते-यार आख़िरकार
सोज़िशे - दाग़े - दिल अपने की वफ़ा से 'सौदा'
क्या कहूं मैं कि हुई शमए-मज़ार आख़िरकार

◇ ◇ ◇

जोश से मेरे जुनूं की क्या ख़ुश आती है बहार
पैरहन[4] में गुल के न्हीं[5] फूली समाती है बहार
आशियां बांधे है किस उम्मीद पर ऐ अंदलीब
आतशे-गुल से कोई दिन में जलाती है बहार
दिल-फ़सुर्दों[6] को कहां ख़ूं-गर्म करता है जुनूं
क्यों मुझे हर साल आ नाहक़ सताती है बहार

१. सूर्य, चन्द्र २. प्रेमियों का दिल ३. जाल ४. कपड़ा, जामा
५. नहीं ६. निराश व्यक्तियों

किसकी आंखों से कहो आयी है मस्ती सीखकर
इस बरस नरगिस पे क्या धूमें मचाती है बहार
अब ख़ुदा हाफ़िज़ है 'सौदा' का, मुझे आता है रहम
एक तो था ही दिवाना तिस पे आती है बहार

◇ ◇ ◇

बुलबुल को क्या तड़पते मैं देखा चमन से दूर
यारब न कीजियो तू किसी को वतन से दूर
ऐ शमअ़ ! कुछ ख़बर है तुझे उस पतंग की
जो बालो-पर जला के पड़ा है लगन[1] से दूर
पूछें भी वह तो हम न कहें आरज़ूए-दिल
वह बात क्यों कहें जो हो अपने दहन[2] से दूर

◇ ◇ ◇

हमने भी दैरो-काबा से दिन चार की हवस
अब सब्हा[3] का न शौक़ न ज़ुन्नार[4] की हवस
नै चैन रोज़े-वस्ल न शब हिज्र की क़रार
क्या जाने क्या है अपने दिले-ज़ार की हवस
दैरो-हरम की पूज चुका है वो संगो-ख़िश्त
जिसको है तेरे सायए-दीवार की हवस
यूं चाहता हूं दाग़ मैं दिल पर हज़ारहा
जिस तरह बाग़बां को हो गुलज़ार की हवस
'सौदा' तू आप आप को समझा के हो ख़मोश
मंसूर को हुई है सरे-दार की हवस

१. मोमबत्ती रखने की तश्तरी २. मुँह ३. माला ४. जनेऊ

सीने में हुआ नाला व पहलू में दिल आतश
धड़के है पड़ा दिल कि न हो मुश्तइल[१] आतश
अश्क आतश ओ खूं आतश ओ हरलख्ते-दिल आतश
आतश पे बरसती है पड़ी मुत्तसिल[२] आतश
दिल इश्क़ के शोले से जो भड़का तो रहा क्या
ऐ जान निकल जा कि लगे मुत्तसिल[२] आतश
इक क़तरए-मै ले उड़ी 'सौदा' को जगह से
बारूद के तूदे[३] को है बस[४] एक तिल आतश

◇ ◇ ◇

छोड़ा मैं कुफ़्रो-दीन-फ़क़त यार से ग़रज़
तस्बीह[५] से है काम न जुन्नार से ग़रज़
सीने में दिल जो है सो तेरी याद के लिए
जुज़[६] दीद[७] क्या है दीदए-खूंबार से ग़रज़
तूबा[८] की तुझको छाँव मुबारक है ज़ाहिदा
है दिल को अपने सायए-दीवार से ग़रज़
प्यारे कहीं ये मुफ़्त तहे-दाम[९] मर न जाय
ग़ाफ़िल न हो तू मुर्ग़े-गिरफ़्तार से ग़रज़
तुम कान धर सुनो न सुनो उसके हर्फ़ को
'सौदा' को हैगी अपनी ही गुफ़्तार से ग़रज़

◇ ◇ ◇

तुझसे चाहूं जो मुहब्बत को हो निरबाह ग़लत
यार वल्लाह ग़लत-फ़हमी है बिल्लाह[१०] ग़लत

१. भड़की २. निकट ३. ढेर ४. काफ़ी ५. माला ६. सिवाए ७. दर्शन ८. स्वर्ग का वृक्ष ९. जाल के तले १०. ईश्वर की सौगंध

नहीं नादान कि हूं मेह्र[1] का तालिब[2] तुझसे
शोले से चाहे मुहब्बत जो परे-काह[3] ग़लत
दर्दे-दिल जिन ने कहा तुझसे मेरा लाख तरह
यही सुन-सुन के कहा तूने कि वल्लाह ग़लत
गर कोई समझे कि ऐ यार ज़बां 'सौदा' की
मरते-मरते तेरे शिकवे से हो कोताह ग़लत

◇ ◇ ◇

ऐ लाला[4] गो फ़लक[5] ने दिये तुझको चार दाग़
छाती मेरी सराह कि इक दिल हज़ार दाग़
सीने से सोज़े-इश्क़[6] तेरा हाथ कब उठाये
ता[7] फूटकर जिगर से न हो जाय यार दाग़
दिल-सोज़े-आशिक़ां[8] कोई 'सौदा' सा अब नहीं
परवाना जल मरे तो वो हो शमअ्-वार[9] दाग़

◇ ◇ ◇

इश्क़ की होवे तो हो हमको असीरी का दिमाग़
दिल न शाही पर है अपना नै फ़क़ीरी का दिमाग़
इसलिए ख़ामोश रहते हैं चमन में अंदलीब[10]
तुझसे हम रखते नहीं हैं हम-सफ़ीरी[11] का दिमाग़
तुझसे कितने ही करें दावा मुरीदी का अगर
शैख़ना[12] दिल को हमारे हो न पीरी का दिमाग़

१. कृपा २. इच्छुक ३ तिनका ४. गुल्लाला ५. आसमान (भाग्य) ६. प्रेम-ताप ७. जब तक कि ८. प्रेमियों का हमदर्द ९. शमअ् की तरह १० . बुलबुल ११. सहयात्री १२. ऐ मेरे शैख़ !

पूछना अशआर का 'सौदा' के क्या है शायरो
गुफ़्तगू में उसकी पाता हूं 'नज़ीरी'[१] का दिमाग़

◇ ◇ ◇

रंग से चेहरे के रुसवा होवे है बीमारे-इश्क़
इश्क़ को यारो छुपा सकता नहीं इन्कारे-इश्क़
तर्क[२] मुझसे क्योंकि हो इश्क़े-बुतां, ऐ अहले-दीं[३]
समझूं हूं तारे-नफ़स[४] को अपने मैं ज़ुन्नारे इश्क़[५]
इस चमन में तरह बुलबुल के वो नालां[६] क्यों न हो
रोज़ो-शब[७] खटका करे सीने में जिसके ख़ारे-इश्क़
गर कहीं आशिक़ है ऐ 'सौदा' तो मैं तुझसे कहूं
वह अमल में लाइयो जो नेक हो किरदारे-इश्क़[८]

◇ ◇ ◇

ज़िन्दगी क्यों न होवे मुझ पर शाक़[९]
यार बे-एतना व दिल मुश्ताक़
इश्क़ तेरे में सब मुनाफ़िक़[१०] हैं
एक ग़म को नहीं है मुझसे निफ़ाक़[११]
ग़म नहीं उसकी बेवफ़ाई का
करे तर्के-वफ़ा न हमसे फ़िराक़
बद्र[१२] क्या उसके आगे ऐ 'सौदा'
मुंह तो देखो कि जैसे होवे तबाक़[१३]

◇ ◇ ◇

१. फ़ारसी का प्रसिद्ध कवि 'नज़ीरी' नीशापुरी २. छोड़ना ३. धार्मिक लोगो ४. सांस का तार ५. प्रेम का जनेऊ ६. रुदनशील ७. रात-दिन ८. प्रेम का चरित्र ९. कड़ी १०. कष्टदायक ११. दुश्मनी १२. पूर्ण चन्द्र १३. थाली

देखा करूं मैं दूर से ऐ यार कब तलक
तड़पा करे मेरा ये दिले-ज़ार कब तलक
दो रोज़ की बहार पे इतना न कर ग़रूर
प्यारे ये बाग़े - हुस्न का गुलज़ार कब तलक
रिश्ता[1] न हो सनम[2] की जो उल्फ़त का हाथ में
गर्दन में बरहमन रखे ज़ुन्नार कब तलक
यूसुफ़ न हाथ आये जो 'सौदा' ब-नक़्दे-दिल[3]
बैठा रहे दुकां पे ख़रीदार कब तलक

◇ ◇ ◇

करती है मेरे दिल में तेरी जल्वागरी रंग
इस शीशे में हर आन दिखाती है परी रंग
किस रंग में देखा न तेरे रंग का जल्वा
सब रंग में है तू पे तेरा सब से बरी[4] रंग
ऐ शीशा-गरां[5] ! दिल कोई टूटा जो बना दे
पैदा करे कुछ और ही फिर शीशा-गरी रंग
है ख़ाक-ब-सर आज, ख़ुदा जाने चमन का
देख आई है क्या जाके नसीमे - सहरी[6] रंग
किस गुल में ये जल्वा है जो अब कुंजे-क़फ़स[7] में
दिखलाती है मेरी मुझे बे - बालो - परी रंग

१. डोरा २. मूर्ति ३. दिल रूपी मूल्य देकर ४. अलग ५. शीशे का काम करने वालो ६. सुबह की हवा ७. पिंजड़े का कोना

मेरा लगता नहीं ऐ बाग़बां तेरे चमन में दिल
लगे क्योंकर किसी का यार बिन सर्वो-समन[१] में दिल
जले हम शाम से ता-सुब्ह[२] हम-बज़्मों[३] में यूं अपने
जले है शमअ़ का जिस तरह तेरी अंजुमन में दिल
नहीं 'सौदा' वो जो मरने के बाद-अज़[४] भी तुझे भूले
पड़ा तड़पेगा तेरी याद में उसका कफ़न में दिल

◇ ◇ ◇

जाता है दिल तो जाइयो हुशियार आजकल
चलती है उसके कूचे में तलवार आजकल
कोई दवा नहीं है मुआफ़िक़ बग़ैर वस्ल
मरता है तेरे ग़म में ये बीमार आजकल
गर ज़मज़मा[५] यही है हमारा तो हम-सफ़ीर[६]
होते हैं इस चमन में गिरफ़्तार आजकल
अ़रसा[७] समझ बहार का साक़ी पहुंच शिताब[८]
जाती है इस चमन से ये गुलज़ार आजकल
मत चल तू इस लटक से कि ज़ालिम क़दम तले
मल डालेगी जहां को ये रफ़्तार आजकल
तेरी ज़बां से उहदा-बर-आ[९] क्योंकि हो कोई
'सौदा' से है जो कुछ तेरी गुफ़्तार आजकल

◇ ◇ ◇

१. चिनार और बेला २. सुबह तक ३. साथियों ४. पश्चात
५. गीत ६. सहयात्री (बुलबुल) ७. समय ८. शीघ्र ९. पार पाना

क़ातिल के दिल से आह न निकली हवस तमाम
ज़र्रा भी हम तड़पने न पाये कि बस तमाम
सय्याद से हूं ऐ असरे - नाला मुन्फ़इल[1]
आतश दी उनने दाम[2] को तोड़े क़फ़स[3] तमाम
अश्क आँख से थमे तो रहे नाले[4] से ये दिल
जब क़ाफ़ला थके तो हो बांगे-जरस[5] तमाम
'सौदा' हुई है शाने[6] को ज़ुल्फ़ों में उसकी राह
इस दस्ते-नारसा[7] को किया दस्त-रस[8] तमाम

◇ ◇ ◇

क्या मचायी उनने मेरे दिल के काशाने[9] में धूम
शोर है जिसके लिए काबे में, बुतख़ाने में धूम
मिट गये वह शोर दिल के हाय तब आयी बहार
वर्ना क्या-क्या हम भी करते शहरो-वीराने में धूम
तुझ निगाहे-गर्म की हसरत से दिल मारे है जोश
रात को देखूं हूं मैं जब शमओ-परवाने में धूम
कब से ऐ 'सौदा' शराब इस बज़्म में पीते हैं यार
तूने ऐ कमज़र्फ़[10] की पहले ही पैमाने में धूम

◇ ◇ ◇

हुस्ने - यकता में तेरे हरगिज़ दुई को रू[11] नहीं
बल्कि यूं समझा है आलम ने कि तुझ-सा तू नहीं

---

१. लज्जित २. जाल ३. पिंजड़े ४. रोना ५. घंटी की आवाज़ ६. कंघा ७. जिसका हाथ कहीं न पहुंचे ८. हाथ पहुंचना (क्षमता) ९. घर १०. छोटे दिल वाला ११. मुँह

गर नहीं बावर[1] तो देख आईने में अपना जमाल
अक्से-गुल में रंग है गुल का पे गुल की बू नहीं
जब उमीदे-वस्ल होती है तो यूं बोले है यास[2]
मुख्तलित[3] इंसां से हो जिन्से-परी की खू[4] नहीं
मैं कहा 'सौदा' से वह भी चाहता है तुझको यार
वह लगा कहने मुहब्बत हममें कुछ यक-सू नहीं

◇ ◇ ◇

क़ैस की आवारगी है दिल में समझो तो कहूं
वर्ना लैली है हर इक महमिल में, समझो तो कहूं
मैकदे[5] और काबे में है क्या तफ़ावत[6] शैख़जी
शीशा है पत्थर की हर इक सिल में, समझो तो कहूं
नासहो[7] कैफ़ीयत उन आंखों की क्या पूछो हो तुम
मुझ-सा आशिक़ हो गया इक पल में, समझो तो कहूं
जानते हो ऐश तुम दुनिया में जिसको सो नहीं
ऐश है दुनिया की जो महफ़िल में, समझो तो कहूं
करते हो हरदम जो वस्फ़े-चश्माए-आबे-हयात[8]
आब है जो खंजरे-क़ातिल में, समझो तो कहूं

◇ ◇ ◇

जो बज़्म बीच तुझे देख करके हट जावें
ये शमअ-रू[9] जो हैं मानिन्दे-शमअ कट जावें
तू उस चमन में है गुल, पर नहीं हैं हम शबनम
वगर्ना रो-रो गले से तेरे लिपट जावें

१. यक़ीन २. निराशा ३. घुला-मिला ४. आदत ५. मदिरालय
६. अंतर ७. समझाने वालो ८. अमृत-स्रोत की प्रशंसा ९. सुंदरियां

हज़ार तरह जो मिलिए बुतां से होकर शाद
पर उनके दिल से ये मुमकिन नहीं कपट जावें
मेरा दिल उस सफ़े-मिज़गां[1] से कब अटकता था
वले[2] मैं क्या करूं तालेअ़[3] ही जब उलट जावें
हुए ग़ुबार न 'सौदा' जो छूते दामने-यार
पर अब की होके हिना पांव से लिपट जावें

◇ ◇ ◇

क्यों मैं तस्कीने-दिल ऐ यार करूं या न करूं ?
नाला[4] जाकर पसे-दीवार[5] करूं या न करूं ?
नासेहा उठ मेरी बालीं से कि दम रुकता है
नाले दिल खोल के दो-चार करूं या न करूं ?
सख़्त मुश्किल है कि हर बात कनाया[6] समझो
है ज़बां मेरे भी, गुफ़्तार करूं या न करूं ?
ख़्वाबे-शीरीं[7] में है और दिल है मेरा मायले-शौक़
जी धड़कता है कि बेदार[8] करूं या न करूं
मौसमे-गुल[9] ही में सय्याद से जाकर यारो
ज़िक्रे-मुर्ग़ाने-गिरफ़्तार करूं या न करूं
कूचए-यार को मैं रश्के-चमन ऐ 'सौदा'
जाके बा-दीदए-ख़ूंबार[10] करूं या न करूं

◇ ◇ ◇

---

१. बरौनियों की पंक्ति २. लेकिन ३. भाग्य ४. रुदन ५. दीवार के पीछे ६. छुपी (कपट-पूर्ण) बात ७. मीठी नींद ८. जागृत ९. बहार १०. ख़ून रोने वाली आंख से

गदा[1] दस्ते - अहले - करम[2] देखते हैं
हम अपना ही दम और क़दम देखते हैं
न देखा जो कुछ जाम में जम[3] ने अपने
सो इक क़तरए-मै[4] में हम देखते हैं
ग़रज़ कुफ़्र से कुछ न दीं से है मतलब
तमाशाए - दैरो - हरम[5] देखते हैं
मिटा जाय है हर्फ़ - हर्फ़ आंसुओं से
जो नामा[6] उसे कर रक़म[7] देखते हैं
ख़ुदा दुश्मनों को न वह कुछ दिखावे
जो कुछ दोस्त अपने से हम देखते हैं
मगर[8] तुझसे रंजीदा-ख़ातिर है 'सौदा'
उसे तेरे कूचे में कम देखते हैं

◇ ◇ ◇

वे सूरतें इलाही किस मुल्क बसतियां[9] हैं
अब जिनके देखने को आंखें तरसतियां हैं
बरसात का तो मौसम कब का निकल गया पर
मिज़गां[10] की यह घटाएं अबतक बरसतियां हैं
क़ीमत में उनके गो हम दो जग को दे चुके अब
उस यार की निगाहें तिस पर भी सस्तियां हैं
उनने कहा ये मुझसे अब छोड़ो दुख़्ते-रिज़ को[11]
पीरी[12] में ऐ दिवाने यह कौन मस्तियां हैं

◇ ◇ ◇

१. भिखारी २. दानियों का हाथ ३. जमशेद बादशाह ४. शराब का बूंद ५. काबे और मंदिर का तमाशा ६. पत्र ७. लिख कर ८. शायद ९. बसतीं १०. बरौनियों ११. शराब १२. बुढ़ापा

ज़िन्दगी महबूब[1] क्या-क्या इसमें हैं महबूबियां
बेवफ़ाई ने पर इसकी दीं मिटा सब ख़ूबियां

◇ ◇ ◇

इतना सितम न कीजै मेरी जान ! जान-जान[2]
यकसां नहीं रहेगा तेरा मान[3] मान-मान[4]
आईना टुक तो देख कि ख़ालिक़[5] ने ख़ाक को
क्या - क्या बनायी सूरते - इंसान सान-सान
गुज़रा है तू चमन से कि जाये-तराना[6] आज
खेंचे है आह मुर्ग़े - गुलिस्तान[7] तान - तान
दुश्नाम[8] देके हाय वो जमघट का खेंचना
चुभती है मेरे दिल में वही आन[9] आन-आन[10]
पूछा किसी ने मारा तू 'सौदा' को किस लिए
बोला, मुझे वो घूरे था हर आन[11] आन-आन[12]

◇ ◇ ◇

डरते-डरते जो तेरे कूचे में आ जाता हूं
सैदे-ख़ायफ़[13] की जगह रू-ब-क़फ़ा[14] जाता हूं
क्यों मुझे घर से निकाले है कि अब तुझको देख
आप में तो, ऐ मेरी जान ! चला जाता हूं
नातवां मुर्ग़ हूं मैं, ऐ रुफ़क़ाए - परवाज़[15]
इतना आगे न बढ़ो तुम कि रहा जाता हूं

१. प्रिय २. जान कर ३. घमंड ४. मान जा ५. ईश्वर ६. गाने की जगह ७. बाग़ का पक्षी ८. गाली ९. अदा १०. क्षण-क्षण ११. क्षण १२. आ-आकर १३. डरे हुए शिकार १४. मुड़-मुड़कर देखता हुआ १५. उड़ने के साथियो

सफ़हए - हस्ती[1] पे इक हर्फ़े-ग़लत है 'सौदा'
जब मुझे देखने बैठो तो उठा जाता हूं

◇ ◇ ◇

नगर आबाद है बसे हैं गांव
तुझ बिन ऊजड़ पड़े हैं अपने भांव[2]
याद कर बाग़ में तुझे साक़ी
रोज़ हम रोये बैठ ताक[3] की छांव
तुझ दहानो-कमर[4] से है जिन्हें इश्क़
अब उन्हों का कहीं न ठौर न ठांव
नौबते - क़ैस हो चुकी आख़िर
अब तो 'सौदा' का बाजता है नांव

◇ ◇ ◇

वाशुद[5] हो खुर्रमी[6] से यह क्या हिसाब तुझ बिन
है ज़िन्दगी से अपनी दिल को हिजाब[7] तुझ बिन
जल्दी पहुंच कि मुझको, डरता हूं, ले न जावे
हूं जिस जगह मैं वां से आंखों का आब, तुझ बिन
बे - इख़्तियार मुंह से निकले है नाम तेरा
करता हूं जिस किसी को प्यारे ख़िताब[8] तुझ बिन
मिल जा जो चाहता है 'सौदा' की ज़िन्दगानी
कुछ बेतरह से इसको है इज़्तराब[9] तुझ बिन

◇ ◇ ◇

१. जीवन-रूपी पृष्ठ २. समझ ३. अंगूर ४. मुंह और कमर
५. प्रफ़ुल्लित ६. ख़ुशी ७. शर्म ८. सम्बोधन ९. बेचैनी

न अश्क आंखों से बहते हैं न दिल से उठती हैं आहें
सबब क्या ? कारवाने-दर्द की मसदूद[1] हैं राहें
बुतां की दोस्ती पर मुत्मइन होवे सो काफ़िर हो
ये ज़ालिम मार डालें बात कहने में जिसे चाहें
न पहुंचा मंज़िले-मक़सूद[2] को मजनूं भी ऐ 'सौदा'
समझकर जाइयो लुटती हैं मुल्के-इश्क़ की राहें

◇ ◇ ◇

तूने 'सौदा' के तईं क़त्ल किया, कहते हैं
यह अगर सच है तो ज़ालिम इसे क्या कहते हैं
जिससे पूछा मैं कि "दिल ख़ुश है कहीं दुनिया में ?"
रो दिया उनने और इतना ही कहा, "कहते हैं"
तू तो इस मानी को सुन शाद हुआ होवेगा
पूछिए अहले-दिलों[3] से कि वो क्या कहते हैं

◇ ◇ ◇

आशिक़ फ़ना[4] में अपने बहबूद[5] जानते हैं
जी का ज़ियां[6] जो होवे तो सूद[7] जानते हैं
कुछ इस सिवा तरक़्क़ी अपनी में हम न समझे
इक दिन-ब-दिन ग़मे-दिल अफ़ज़ूद[8] जानते हैं
अपना चिराग़ दिल का जिस दम से बुझ गया है
हम घर को आसमां के पुर-दूद[9] जानते हैं

---

१. रुकी हुई २. इच्छित लक्ष्य ३. प्रेमियों ४. अंत होना
५. भलाई ६. नुक़सान ७. लाभ ८. अधिक ९. धुएं से भरा

जिस ख़िश्त[१] को उठाकर देखें वो चश्मे-दिल[२] से
सूरत को अपनी उसमें मौजूद जानते हैं
अज्ज़ो - ग़रूर[३] दोनों अपनी ही ज़ात से हैं
हम अब्द[४] से जुदा कब माअबूद[५] जानते हैं

◇ ◇ ◇

आशिक़ की भी कटती हैं क्या ख़ूब तरह रातें
दो चार घड़ी रोना दो चार घड़ी बातें
औरों से छुटे दिलबर दिलदार होवे मेरा
बर-हक़[६] हैं अगर पीरो कुछ तुम में करामातें
कल लड़ गयीं कूचे में आंखों से मेरी अंखियां
कुछ रोज़ ही आपस में दो-दो चलीं सम घातें

◇ ◇ ◇

उमीद हो गयी कुछ गोशा-गीर[७] सी दिल में
रहा करे है तमन्ना असीर सी दिल में
ख़ुदा के वास्ते ख़ामोश नासेहा[८] बेदर्द
लगे है बात तेरी मुझको तीर सी दिल में
अगर्चे दुख़्तरे - रिज़[९] फ़ाहिशा है ऐ 'सौदा'
लगे है पम्बए-मीना[१०] से पीर[११] सी दिल में

◇ ◇ ◇

दिल को ये आरज़ू है सबा[१२] कूए - यार में
हम-राह तेरे पहुंचिए मिलकर ग़ुबार में

१. ईंट २. हृदय की आंख ३. नम्रता और गर्व ४. पूजक ५. ... ६. सच्ची ७. जमी हुई ८. ऐ उपदेशक ९. अंगूर की बेटी (शराब) १०. बोतल के मुंह पर काग की जगह लगी हुई रूई ११. बुज़ुर्ग १२. हवा

मैं वह दरख़्ते - ख़ुश्क हूं इस बाग़ में सबा
जिसको किसू ने सब्ज़ न देखा बहार में
'सौदा' तू दुख़्ते-रिज़[1] को तो इतना न मुंह लगा
तकलीफ़ पावेगा बहुत इसके ख़ुमार में

◇ ◇ ◇

जी तक तो दे के लूं जो हो तू कारगर कहीं
ऐ आह क्या करूं नहीं बिकता असर कहीं
होती नहीं है सुब्ह न आती है मुझको नींद
जिसको पुकारता हूं सो कहता है मर कहीं
साक़ी है इक तबस्सुमे - गुल[2] फ़ुरसते - बहार[3]
ज़ालिम भरे है जाम तू, जल्दी से भर कहीं
जादू भरे हैं चश्म में मत आईने को देख
धड़के है दिल मेरा कि न पलटे नज़र कहीं
सोहबत में तेरी आन के ज्यूं शीशए - शराब
ख़ाली करूं मैं दिल के तईं बैठकर कहीं
ऐ दिल ! ये कह तू मुझसे कि मैं क्या करूं निसार
आवें कभू जो हज़रते - 'सौदा' इधर कहीं

◇ ◇ ◇

आंखों को टुक संभालो यह मारती हैं राहें
निभने मुसाफ़िरों को देती नहीं निगाहें
क्या हुस्नो-इश्क़ में अब बिगड़ी है बेतरह से
तीरे - निगह तो वां हैं यां बर्छियां हैं आहें

१. शराब २. फूल की मुस्कान (जैसा अस्थिर) ३. बहार का समय

आवे वो सैर करने इक बार जो चमन में
गुल आसमां पे अपनी फेंकें सदा कुलाहें[१]
उस दिल में गो हमारी उल्फ़त नहीं रही अब
अपनी तरफ़ से ऐ दिल हम तो भला निबाहें
टुक मेह्र[२] दे खुदाया काफ़िर बुतों के दिल में
या आशिक़ों के जी से खो दे उन्हों की चाहें
'सौदा' तू आशिक़ी में साबित-क़दम ये रहना
फ़िरक़े में आशिक़ों के ता[३] सब तुझे सराहें

◇ ◇ ◇

टुकड़े तो अभी लाल के दिल बीच धरे हैं
हमने तो अभी मोती ही आंखों में भरे हैं
सद शुक्र कि मरने का ख़लिश उठ गया दिल से
जब से हुए पैदा हम उसी दिन से मरे हैं
इस बाग़ में हमसे न मिले सूद[४] किसू को
नै गुलबने - सरसब्ज़[५] न हम नख़्ल[६] हरे हैं
'सौदा' जो तेरे यार के दिल से न गया खोट
वह कैसा ही खोटा हो मियां हम तो खरे हैं

◇ ◇ ◇

लहू इस चश्म का पोंछे से नासेह बन्द क्योंकर हो
जो दिल टूटे किसी के हाथ से पैवन्द क्योंकर हो
मिले है गुंचए-गुल[७] ख़ाक में यक-लब[८] तबस्सुम[९] से
किसू का दिल कहो इस बाग़ में खुरसंद[१०] क्योंकर हो

१. टोपियां २. रहम ३. ताकि ४. लाभ ५. गुलाब का हरा पेड़
६. पेड़ ७. कली ८. क्षणिक ९. मुस्कुराहट १०. प्रसन्न

फ़राहम[1] मालो-ज़र घर में किया अपने तो क्या हासिल
ग़नी[2] जिसका नहीं है दिल वो तालेअ़मंद[3] क्योंकर हो
ग़ज़ाले - दश्त[4] की हरचन्द हैं इब्लह - फ़रेब[5] आंखें
पर अंखियों का तेरी ऐ यार उनमें छंद क्योंकर हो

◇ ◇ ◇

शैख़ ने उस बुत को जिस कूचे में देखा शाम को
ले चिराग़ अब ढूंढते हैं ता-सहर[6] इस्लाम को
छूटकर तुझसे न पतियावे किसी से फिर ये दिल
मुर्ग़ वह फंसता नहीं जो तोड़ भागे दाम[7] को
यह शफ़क़[8] मत समझियो यारो ख़ुदा जाने फ़लक[9]
पोंछे है दामन से किसके तेग़े-ख़ून-आशाम[10] को
फिर कहीं दिल देने की हमने तो खायी है क़सम
दिल जो देता है कोई तो जान के आराम को

◇ ◇ ◇

न पूछो क़त्ल करने में किसू से बैर है उसको
चले तलवार तो आबे-रवां[11] की सैर है उसको
शिकार - अंदाज़[12] इन्सां का है, वह कब जाए सहरा[13] में
सिवाये मुर्ग़े-दिल कब मैले-वहशो-तैर[14] है उसको
सबब आज़ारे-दिल मेरे का है बे-उल्फ़ती उसकी
न अपने से मुहब्बत है न मेहरे-ग़ैर है उसको

---

१. जमा २. धनी ३. भाग्यवान ४. जंगली हिरन ५. सीधे-सादे को लुभाने वाली ६. सुबह तक ७. जाल ८. आसमान की लाली ९. आकाश १०. ख़ून की प्यासी तलवार ११. बहते पानी १२. शिकार करने वाला १३. जंगल १४. पशु-पक्षियों का शौक़

किया बरगश्ता-दीं[१] 'सौदा' को किस काफ़िर की मिज़गां[२] ने
कि सुरमा चश्म का अब खाके - राहे - दैर[३] है उसको

◇ ◇ ◇

आलूदा-ज़ि-क़तराते-अरक़[४] देख जबीं[५] को
अख़्तर[६] पड़े झांकें हैं फ़लक पर से ज़मीं को
आता है तो आ शोख़ कि मैं रोक रहा हूं
मानिंदे-हुबाब[७] अपने दमे-बाज़पसीं[८] को
मतलब के मेरे अर्ज़ पे इक बार भी 'सौदा'
'हां' ने न छुड़ाया कभी उस लब से 'नहीं' को

◇ ◇ ◇

दे के दिल हाथ सर न धर कर रो
ज़िन्दगानी की मत हलावत[९] खो
रिश्ता[१०] मोहकम[११] नहीं मुहब्बत का
दिल-से गौहर[१२] को उसमें तू न पिरो
अब तो दिल दे चुका उसे 'सौदा'
आगे क़िस्मत है, होनी हो सो हो

◇ ◇

दिलदार उसको ख़्वाह दिल - आज़ार कुछ कहो
सुनता नहीं किसू की मेरा यार कुछ कहो

१. धर्म-विमुख २. बरौनी ३. मन्दिर की राह का धूल ४. (लज्जा के) पसीने से तर ५. माथा ६. तारे ७. बुलबुले की भांति ८. आख़िरी सांस ९. मिठास १०. डोरा ११. मज़बूत १२. मोती

शीरीं ने कोहकन[१] से मंगायी थी जूए-शोर[२]
गर इम्तहाँ है इससे भी दुश्वार कुछ कहो
हर आन आ सताते मुझी को हो नासहो
समझाके तुम उसे भी तो इकबार कुछ कहो
'सौदा' मुआफ़क़त का सबब जानता है यार
समझें मुख़ालिफ़ उसके कुछ अग़यार कुछ कहो

◇ ◇ ◇

इस दर्दे - दिल से मौत हो या दिल को ताब हो
क़िस्मत का जो लिखा हो इलाही शिताब[3] हो
इस कश्मकश से दाम[४] की क्या काम था हमें
ऐ उल्फ़ते - चमन तेरा ख़ाना ख़राब हो

◇ ◇ ◇

लेने लगा है अब तो मेरा नाम गाह - गाह[५]
भेजेंगे हम भी नामा-ओ-पैग़ाम गाह-गाह
ख़ुर्शीद[६] की तरह से नहीं हरज़ा-गर्द[७] वह
निकले है माहताब[८] मेरा शाम गाह-गाह
दीवार घर के यार की मत ढा तू सैले-अश्क[९]
करता हूं उसके साये में आराम गाह - गाह
ताक़त हमें भी मुर्ग़-चमन कुछ हो आयी अब
होने लगा है नाला[१०] सरंजाम[११] गाह-गाह

◇ ◇ ◇

---

१. फ़रहाद २. दूध की नहर ३. जल्द ४. जाल ५. कभी-कभी ६. सूर्य ७. आवारा ८. चाँद ९. आंसू की बाढ़ १०. रोना ११. पूरा

बारहा[1] दिल को मैं समझाके कहा क्या-क्या कुछ
न मेरी सुनके कभू आप बका क्या-क्या कुछ
इज़्ज़तो - आबरू - ओ - हुरमतो - दीनो - ईमान
रोऊं किस-किस को मैं यारो कि गया क्या-क्या कुछ
सब्रो-आराम कहूं या कि मैं अब होशो-हवास
हो गया उसकी जुदाई में जुदा क्या-क्या कुछ
गिरियए-शीशा[2] कभी था तो कभी ख़न्दए-जाम[3]
साक़ी इस दौर में तेरे न हुआ क्या-क्या कुछ
ज़ोफ़[4]-ओ-नाताक़ती-ओ - सुस्ती - ओ - एज़ाशिकनी[5]
एक घटने में जवानी के बढ़ा क्या-क्या कुछ
सैर की क़ुदरते-ख़ालिक़[6] की बुतां में 'सौदा'
मुश्त[7] भर ख़ाक में जल्वा है भरा क्या-क्या कुछ

० ० ०

यां न ज़र्रा ही चमकता है फ़क़त गर्द के साथ
जल्वागर नूर है ख़ुर्शीद[8] का हर फ़र्द[9] के साथ
ज़ख़्म की तरह ज़माने में तू काट अपनी उम्र
ख़न्दा-ओ-गिरिया[10] जो कुछ होवे सो टुक दर्द के साथ
हम कहाते हैं तेरे बन्दए - बे - ज़र[11] प्यारे
गुल ने बुलबुल को ख़रीदा है ज़रे - दर्द[12] के साथ
सुबह-दम आज चमन में ब-लबे-जू[13] 'सौदा'
शे'र बैठा वो ये पढ़ता था निपट दर्द के साथ

१. कई बार २. बोतल का रोना ३. प्याले ४. कमज़ोरी ५. बदन टूटना ६. ईश्वर की लीला ७. मुट्ठी ८. सूर्य ९. व्यक्ति १०. हंसना-रोना ११. बेदाम का ग़ुलाम १२. दर्द-रूपी धन १३. नहर के किनारे

दिल को चाहा था मैं खाली करूं मानिन्दे - हुबाब[1]
हो गयी जान हवा इक नफ़से-सर्द[2] के साथ

◇ ◇ ◇

आ पहुंच साक़ी कि फिर अय्याम[3] कब आते हैं यह
फ़स्ले-गुल[4] के कुछ गये दिन, कुछ चले जाते हैं यह
इस क़दर बांके हैं ऐ ज़ालिम तेरी पगड़ी के पेच
दिल मेरा अटका है ज़ुल्फ़ों बीच, बल खाते हैं यह
क्योंकि ग़म्माज़ों[5] से समझूं आह यूं कह देंगे फिर
मुंह लगाते तुम नहीं ग़ैरों पे झुंझलाते हैं यह
ग़ैरते-इश्क़ आके ऐ 'सौदा' तू परवानों से सीख
शमअ़ से अपना भी मिलना देख जल जाते हैं यह

◇ ◇ ◇

जब खुश हो तो दे गाली इक बार सो यह तोहफ़ा
रंजिश, तो कहूं किससे है प्यार सो यह तोहफ़ा
हर दम के तफ़हहुस[6] से दम नाक में है मेरा
ग़म अपने की वह सूरत, ग़मख्वार सो यह तोहफ़ा
सब्रो-दिलो-दीं ताक़त देखा उसे और सरके
हैं जग में रफ़ीक़[7] अपने दो-चार सो यह तोहफ़ा
इस दिल को शिफ़ा[8] क्योंकर तुझ इश्क़ की तप से हो
आज़ार कुढब अपना, बीमार सो यह तोहफ़ा

---

१. बुलबुले की तरह २. ठंडी सांस ३. दिन ४. बहार ५. चुग़लखोरों (प्रतिद्वंद्वियों) ६. पूछताछ ७. दोस्त ८. इलाज

सुन नज़्म को 'सौदा' के मुंह फेर लगा कहने
आफ़ाक़[1] में वह शोहरा[2] अशआर सो यह तोहफ़ा

◇ ◇ ◇

बोला वो जिसे तेरी तसवीर नज़र आयी
यह ख़्वाबे-ज़ुलेख़ा की ताअबीर[3] नज़र आयी
वे नाले[4] जो मोम अक्सर करते हैं पहाड़ों को
उनकी न तेरे दिल में तासीर नज़र आयी
दिल देने में जो चाहो ताज़ीर[5] करो हमको
इस अम्र[6] में अपनी ही तक़सीर नज़र आयी
मस्तों का सुख़न[7] हमको 'सौदा' ये बहुत भाया
वाइज़ की तो बातों में तज़वीर[8] नज़र आयी

◇ ◇ ◇

इस बाग़ में इक गुल को ख़ंदां[9] जो कहीं देखा
सौ ग़ुंचे की सूरत वां दिलगीर नज़र आयी
की उम्र अबस ज़ाया ख़िदमत में मुहव्विस[10] की
ख़ाक अपनी ही जब छानी अक्सीर नज़र आयी
देखी न बिना[11] हमने वह क़स्रे-फ़रीदूं[12] की
जो अपने ख़राबे[13] की तामीर नज़र आयी
सनअत के मुसव्विर[14] ने खोला जो मुरक़्क़े[15] को
इक उसमें न तेरी सी तसवीर नज़र आयी

१. संसार २. ख्याति ३. स्वप्न-फल ४. रुदन ५. दंड ७. काम ७. बात ८. कपट ९. हंसता १० रासायनिक ११. नींव १२. फ़रीदूं बादशाह का महल १३. खंडहर १४. चित्रकार १५. चित्र-संग्रह

उस ज़ुल्फ़ को जब देखा मैं हाथ में 'सौदा' के
बिफरे हुए हाथी की ज़ंजीर नज़र आयी

◆ ◆ ◆

संग[1] पर छेनी को पटको गर सदा[2] मंज़ूर है
दिल को आशिक़ के न समझो कासए-फ़ग़फ़ूर[3] है
लोग कहते हैं परी, कहता हूं मैं यह हूर है
फ़िल-हक़ीक़त दोनों से जल्वा सनम का दूर है
ऐ ख़याले-यार इस सीने में अब मत रख क़दम
शीशए-दिल संग से हिजरां के चकनाचूर है
दिल तो नाले[4] की हवस रखता है उसके सामने
सांस लेने का दिवाने वां किसे मक़दूर[5] है
आ ख़ुदा के वास्ते 'सौदा' को हर दम मत सता
आशिक़े-रंजूर है, मजबूर है, महजूर[6] है

◆ ◆ ◆

जुर्म के अफ़्व[7] की तदबीर बहुत अच्छी है
बेगुनह रहने से तक़सीर[8] बहुत अच्छी है
मुझको सौंपा है ज़माने के तईं क़िस्मत ने
दस्ते-नामर्द[9] में शमशीर बहुत अच्छी है
लेके काबे से किया सैर मैं मैख़ाने तक
ख़ानए-दिल ही की तामीर[10] बहुत अच्छी है

१. पत्थर २. आवाज़ ३. फ़ग़फ़ूर बादशाह का कपाल जिसे मूर्ति पर चढ़ाया गया था ४. रोना ५. शक्ति ३. विरही ७. क्षमा ८. क़सूर ९. नामर्द का हाथ १० बनावट

ज़िक्र को ऐश के कहते हैं कि है निस्फ़ुल-ऐश[१]
हिज्र में वस्ल को तक़रीर बहुत अच्छी है
नेको-बद से न करूं अपने लिखे का शिकवा
जो कि क़िस्मत की है तहरीर, बहुत अच्छी है
जितने हैं काम तेरे सौंप ख़ुदा को 'सौदा'
तेरी तदबीर से तक़दीर बहुत अच्छी है

◇ ◇ ◇

फूटे वो आंख जिसमें न ज़र्रा भी नम रहे
दिल जल बुझे वो जिसके न हमसाया ग़म रहे
टुक हमरहाने-क़ाफ़िला[२] से कह दे ऐ सबा[३]
ऐसे ही गर क़दम हैं तुम्हारे तो हम रहे
ग़म से हुई है कारंवाई ये दिल की बन्द
चलते हुए अब अश्क ही आंखों में थम रहे
मुफ़लिस हमें न बूझ जो रखते नहीं हैं कुछ
ख़ाली हमेशा कीसए-अहले-करम[४] रहे
'सौदा' है क्या तिलिस्मे-ज़माना का एतबार
ने जाम ही रहे हैं जहां में न जम[५] रहे

◇ ◇ ◇

दुनिया तमाम गर्दिशे-अफ़लाक[६] से बनी
माटी हज़ार रंग की उस चाक से बनी

१. आधा ऐश २. क़ाफ़िले के साथियों ३. हवा ४. दानियों की थैलियां ५. जमशेद ६. आसमान का घूमना (भाग्य-चक्र)

लख़्ते-जिगर[1] मिज़ा[2] से करे क्या ये देखिए
आतश को यह सुना है कि नमनाक[3] से बनी
सोहबत में अपनी बनते न देखी किसू के साथ
मेरी बनी तो मुझ दिले-ग़मनाक से बनी
ऐसी बनी कि हो गई यकसां ज़मीं के बीच
'सौदा' ये जिस्मे-ज़ार की तब ख़ाक से बनी

◇ ◇ ◇

जब इस चमन से छोड़ के हम आशियां[4] चले
इक हमसफ़ीर[5] ने भी न पूछा कहां चले
क्या ले लिया था हमने उलझता जो कोई ख़ार
ज्यूं गुल हम उसके बाग़ से दामन - फ़शां[6] चले
राहे-अ़दम[7] भी ज़ोर है 'सौदा' कि जिसके बीच
जिस तरह पीर जाये है वूं हो जवां चले

◇ ◇ ◇

जाते हैं लोग क़ाफ़िले के पेशो-पस[8] चले
दुनिया अ़जब सरा है जहां आके बस चले
कहियो सबा सलाम हमारा बहार से
हम तो चमन को छोड़के सूए-क़फ़स[9] चले
ऐ ग़ुंचा[10] आंखें खोल के टुक तो चमन को देख
जमईयते - दिली[11] पे तेरी फूल हँस चले

१. कलेजे का टुकड़ा २. बरौनी ३. पानी ४. घोंसला ५. साथ उड़ने वाले (पक्षी) ६. दामन झाड़कर ७. मौत की राह ८. आगे-पीछे ९. पिंजड़े की तरफ़ १०. कली ११. इत्मीनान

तेरे सुख़न[1] को मैं ब - सरो - चश्म[2] नासेहा[3]
मानूं हज़ार बार अगर दिल से बस चले
काम उस गली में सर से ये 'सौदा' गुज़र चुका
क्या ताब[4] इक क़दम जो उधर बुल्हवस[5] चले

◇ ◇ ◇

पोंछे न कभी अश्क वो मग़रूर किसू के
पड़ जाएँ अगर चश्म[6] में नासूर किसू के
तू कह के हमें सख़्त न बदनाम हो नासेह
यह शीशए - दिल हाथ से है चूर किसू के
क़िस्मत कि मैं दिल अपना किया पीस के सुरमा
तिस पर भी नहीं चश्म में मंज़ूर किसू के
हो चश्म से कैसा ही जो नज़दीक तो फिर क्या
जिस रोज़ पड़ा दिल से कोई दूर किसू के
'सौदा' तू अबस[7] रहता है याद उसकी में ग़मगीन
वह साथ शबो - रोज़[8] है मसरूर किसू के

◇ ◇ ◇

यारब ! कहीं से गर्मिए - बाज़ार भेज दे
दिल बेचता हूं कोई ख़रीदार भेज दे
अपनी बिसात में तो यही दिल है मेरी जान
लेता नहीं तो क्या करूं नाचार भेज दे
दावा जो बरशगाल[9] को आंखों से है मेरी
ऐसा तो कोई अब्रे - गुहर - बार भेज दे

---

१. बात २. सर आंखों से ३. ऐ उपदेशक ४. ताक़त ५. लोलुप
६. आंख ७. बेकार ८. रात-दिन ९. बरसात

'सौदा' से ग़म-गुसार का था दिल ये तें लिया
उसके इवज़ भला कोई ग़मख़्वार भेज दे

◇ ◇ ◇

गर्मी[1] उस शोले[2] से हैहात[3] न होने पायी
हूं वो परवाना जिसे रात न होने पायी
जी की जी ही में रही यार मेरी बालीं[4] तक
पहुंचा उस वक़्त कि कुछ बात न होने पायी
गुलो-बुलबुल की भी ख़ू-बू[5] से हों महरम[6] इतने
इस चमन में बसर औक़ात न होने पायी
दिल मेरा है न किया दैर[7] निगह ने उसकी
है वो मसजिद कि ख़राबात[8] न होने पायी

◇ ◇ ◇

तुझ इश्क़ के मरीज़ की तदबीर शर्त है
लेकिन शिफ़ा[9] को गर्दिशे-तक़दीर[10] शर्त है
सौदाए-दिल[11] को ज़ुल्फ़े-गिरहगीर[12] शर्त है
दीवाने के इलाज को ज़ंजीर शर्त है
नाले तो मैं बहुत किये उस बुत के सामने
पत्थर के नर्म करने को तासीर शर्त है
हो ख़ाक राहे-इश्क़ में ता[13] क़द्र हो तेरी
मिस[14] को तिला[15] बनाने को अकसीर शर्त है

---

१. दोस्ती २. ज्वाला (प्रियतम) ३. हाय ४. सिरहाने ५. आदत ६. जानकार ७. मंदिर ८. मदिरालय ९. स्वास्थ्य १०. भाग्य-चक्र ११. हृदय का उन्माद १२. बंधे बाल १३. ताकि १४. तांबा १५. सोना

'सौदा' मैं इस चमन में हूं ज्यूं गुंचा दिल-गिरफ़्त[1]
मातम - सरा[2] में सूरते - दिलगीर[3] शर्त है

◇ ◇ ◇

सूरत में मैं कहता नहीं ऐसा कोई कब है
इक धज है कि वह क़त्ल है आफ़त है ग़ज़ब है
क्या चीज़ है वह दिल जिसे कहते हैं इलाही
इक क़तरए - ख़ूं सीने में आफ़ात-तलब[4] है
तुझ बिन मेरी नज़रों में ये तारीक[5] है आलम
हर रोज़ मेरी आंखों में सावन की सी शब[6] है
दुश्नाम[7] तो देने की क़सम खाये है लेकिन
जब देखे है वह मुझको तो इक जुम्बिशे-लब[8] है
कहते हैं जिसे इश्क़ सो वह चीज़ है 'सौदा'
ज्यूं ज़ाते-ख़ुदा जिसकी हसब[9] है न नसब[10] है

◇ ◇ ◇

किस से जा अटका है दिल मेरा अजब दीवाना है
शोरे - महशर[11] एक जिसकी शोख़िए - जानाना है
अक्से-रू[12] पर अपने कुछ आप ही नहीं मफ़्तूं[13] वो शोख़
जौहरे - आईना तक उस शमअ़ का परवाना है
क़द्र समझे वुसअ़ते - दिल[14] की न शैख़ो - बरहमन
वर्ना दोनों के लिए हम[15] काबा हम बुतख़ाना है

१. रंजीदा २. रंज का घर (दुनिया) ३. रंजीदा सूरत ४. आफ़तों का इच्छुक ५. अंधेरा ६. रात ७. गाली ८. होंट हिलना ९. रुत्बा १०. खानदान ११. क़यामत का शोर १२. चेहरे का प्रतिबिंब १३. आसक्त १४. दिल का विस्तार १५. वही

नश्शे को हरगिज़ हक़ीक़त के न पहुंचेगा कोई
जब तलक ऐ यार ख़ाली उम्र का पैमाना है
अपनी लैला का वो कुछ मजनूं सा रुसवा - कुन[1] नहीं
राज़दारे - इश्क़ 'सौदा' ज़ोर है मस्ताना है

◇ ◇ ◇

निकलके चौखट से घर की प्यारे जो पट के ओझल ठिठक रहा है
समट के चट से तेरे दरस को नयन में जियरा अटक रहा है
जिन्हों की छाती से पार बरछी हुई है रन में वो सूरमा हैं
बड़ा वो सावंत मन में जिसके बिरह का कांटा खटक रहा है
मुझे पसीना जो तेरे मुख पर दिखायी दे है तो सोचता हूं
ये क्योंकि सूरज की जोत आगे हर एक तारा छिटक रहा है
गुनी हो कैसा ही, ध्यान जिसका तेरे गुनों से लगा है प्यारे
गियान परबत भी है जो उसका तो छोड़ उसको सटक रहा है
जो मैंने 'सौदा' से जाके पूछा तुझे कुछ अपने है मन की सुध-बुध
ये रोके मुझसे कहा किसी की लटक में लट की लटक रहा है

◇ ◇ ◇

जौहर को जौहरी और सर्राफ़ ज़र[2] को परखे
ऐसा कोई न देखा वह जो बशर[3] को परखे
जौहर न होवे जिसमें जौहर - शनास[4] कब है
जो साहबे - हुनर हो वह ही हुनर को परखे

१. बदनामी करने वाला २. सोना ३. आदमी ४. जौहर पहचानने वाला।

ख़ातिर में वह न लावे रग-हाए - अब्रे - नैसां[१]
जो क़तरा-हाए-अश्के-मिज़गाने-तर[२] को परखे
दुर्रे - सुख़न[३] को अपने परखाए आदमी से
हरगिज़ न कह तू 'सौदा' हर जानवर को परखे

◇ ◇ ◇

बुत अपने के मुक़ाबिल सूरत न दे दिखाई
हो इक तरफ़ अगर वह और इक तरफ़ ख़ुदाई
आंखों में नम हमारे जब तक न था, मिले था
रोने ने दम - बदम के वह बात है डुबाई
थी सर्द-मेह्री[४] उसकी आबे-हयात[५] दिल को
झूठे तपाक ने तो कुछ आग सी लगाई
बन्दे के हाल की तो नासेह को कब ख़बर थी
फिर सोती भिड़ ये किन ने मेरे लिए जगाई

◇ ◇ ◇

वही जहां में रमूज़े - क़लन्दरी[६] जाने
भभूत तन पे जो मलबूसे - क़ैसरी[७] जाने
गुलाम उसकी मैं हिम्मत का हूं कि जो अपने
जिगर के ख़ून को ख्वाने - तवंगरी जाने
पड़ा है पाले इक ऐसे के दिल कि जो नादां
वफ़ा की राह न रस्मे - सितमगरी जाने

१. स्वाति के बादल की नसें २. भीगी बरौनियों के आंसू की बूंदें ३. काव्य-मुक्ता ४. उपेक्षा ५. अमृत ६. फ़क़ीरी के रहस्य ७. राजाओं के वस्त्र

तेरा मक़ाल[1] रहे - दीं[2] से दूर है ऐ शैख़
मुरीद गो उसे क़ौले - पयम्बरी जाने

◇ ◇ ◇

हर एक शै[3] में समझ तो ज़हूर किसका है
शरर[4] में रौशनी शोले में नूर किसका है
दिमाग़े-खल्क़[5] पुर-अज़-किब्र[6] है, मैं हैरां हूं
ये मुश्ते-ख़ाक[7] में इतना ग़रूर किसका है
जहां के बज़्म से यारो किसी का उठ जाना
ये कौन जाने कि नज़दीक दूर किसका है
कहे है तुन्द[8] बज़ाहिर तुझे अभी 'सौदा'
तेरा-सा मर्तबा उसके हुज़ूर किसका है

◇ ◇ ◇

न नरगिस की पलक तेरे तमाशे ने है झंपवाई
तू वह गुल है कि जिस गुल का हरइक गुल है तमाशाई
नहीं है घर कोई ऐसा जहाँ उसको न देखा हो
कन्हैया से नहीं कुछ कम सनम मेरा वो हरजाई
मुहब्बत के करूं भुजबल की मैं तक़रीर क्या यारो
सितम परबत हो तो उसको उठा लेता है ज्यूं राई
झंकाया था मुझे ज़ाहिद ने कूचा रंजे-दुनिया का
मुग़ां[9] ने राहते-दुनिया की मुझको बात बतलाई
कहे है यार यूं मुझसे अजब ही लुत्फ़ से 'सौदा'
चमन में सुम्बुल-ओ-गुल नरगिस अबकी दे है दिखलाई

---

१. वचन २. धर्म की राह ३. चीज़ ४. चिंगारी ५. दुनिया
का दिमाग़ ६. गर्व से भरा ७. मुट्ठी भर मिट्टी ८. तेज़ ९. साक़ी

पर इससे क्या कि तेरी ज़ुल्फ़ ने आ़रिज़[1] ने आँखों ने
पियारे बांट लो बाहम[2] मेरी आँखों की बीनाई[3]

◇ ◇ ◇

क्या जानिए किस-किससे निगह उसकी लड़ी है
जिस कूचे में जा देखो तो इक लोथ पड़ी है
मैं हाल कहूं किससे तेरे अ़हद[4] में अपना
रोते हैं कहीं दिल को कहीं जी की पड़ी है
ठहरा है तेरी चाल में और ज़ुल्फ़ में झगड़ा
हर एक ये कहती है लटक मुझमें बड़ा है
गो पीर[5] हुई शायरी 'सौदा' की जवानो
तुमसे न खिंचेगी ये कमां सख़्त कड़ी है

◇ ◇ ◇

आ़शिक़ को न कर पियार जी से
पर उसको न मार यार जी से
तुझ-से को जो अ़न्दलीब देखे
दे गुल को वहीं उतार जी से
'सौदा' ने तो सब कुछ अब बिसारा
कीजो तू ये एतबार जी से
मुझ पास तो कुछ न था न अब है
आप ही मैं हुआ निसार जी से
इंसाफ़ की शर्त तो यही है
तू भी उसे मत बिसार जी से

१. गाल २. आपस में ३. देखने की ताक़त ४. ज़माना ५.

जब नज़र उसकी आन पड़ती है
ज़िन्दगी तब धियान पड़ती है
झेल लेते हैं आशिक़ ऐ फ़रहाद
जिसके सर जैसी आन पड़ती है
नज़र इन महवशाँ[१] की है ज़ालिम
क्या ग़ज़ब आन बान पड़ती है
दिल से पूछा मैं यह कि इश्क़ की राह
किस तरफ़, मेह्रबान ! पड़ती है
कहा उनने कि नै ये हिन्दुस्तान
नै सुए-अस्फ़हान[२] करती है
यह दोराहा जो कुफ़्रो-दीन का है
दोनों के दरमियान पड़ती है
मंज़िलत[३] शे'र की तेरे 'सौदा'
यूं ब - वह्मो - गुमान पड़ती है

◇ ◇ ◇

दिल किसी से कि जब पलटता है
दीनो-दुनिया से जी उचटता है
ग़ुंचा[४] सिमटे तो सिमटे मुमकिन है
दिल जो बिखरे तो कब सिमटता है
इश्क़ से तो नहीं हूं मैं वाक़िफ़
दिल को शोला-सा कुछ लिपटता है

१. चन्द्र-मुखियों २. अस्फ़हान (ईरान का एक शहर) की ओर
३. उच्चता ४. कली

नासेहो[1] दिल दिया है मैं अपना
कुछ तुम्हारा भी इसमें बटता है ?
मुल्के-दिल क़त्ल करके ऐ 'सौदा'
लश्करे - हुस्न यूं पलटता है

◇ ◇ ◇

नीमजाँ[2] हैं ये तेरे चश्म के बीमार कई
मर गये खंजरे-मिज़गाँ[3] के दिल-अफ़गार[4] कई
कोई सिसके, कोई तड़पे है, कोई है बेचैन
आज देखे तेरे कूचे में गिरफ़्तार कई
इश्क़ ही शर्त है क्या हो मरज़-उल-मौत[5] मुझे ?
यारब ! इंसान के मरने के हैं आज़ार कई
खूब देखा मैं जहां, अहले-जहां[6] भी देखे
एक ज़िन्दां[7] है कि जिसमें हैं गुनहगार कई
तेरे बाज़ार में अब क्योंकि न बिगड़े 'सौदा'
एक यूसुफ़ नज़र आता है खरीदार कई

◇ ◇ ◇

अब के भी दिन बहार के यूं ही चले गये
फिर - फिर गुल आ चुके पे सजन तुम भले गये
पूछे है फूल-फल की खबर अब तू अन्दलीब ?
टूटे, झड़े, खिज़ां हुई, फूले, फले, गये
दिलख्वाह कब किसी को ज़माने ने कुछ दिया
जिनको दिया कुछ, उसमें से वह कुछ न ले गये

१. उपदेशकों २. अधमरे ३. बरौनियों के खंजर ४. घायल
५. प्राण-घातक रोग ६. दुनिया वाले ७. क़ैदखाना

ऐ शमग्र् दिल गुदाज़[1] किसी का न हो कि शब[2]
परवाना दाग़ तुझ से हुग्रा, हम जले गये
'सौदा' कोई भी देवे है ऐसा दिल उनके हाथ
लाखों ही दिल क़दम तले जिनके मले गये

◇ ◇ ◇

तेरी उन उल्फ़तों के ज़माने किधर गये
क्या जानिए कहां हैं, न जाने किधर गये
है मुद्दतों से खानए-ज़ंजीर[3] बे-सदा[4]
मालूम ही नहीं कि दिवाने किधर गये

◇ ◇ ◇

गर तुझमें है वफ़ा तो जफ़ाकार[5] कौन है
दिल-दार तू हुग्रा तो दिल-ग्राज़ार कौन है
नालां[6] हूं मुद्दतों से तेरे साये के तले
पूछा न यह कभू पसे-दीवार[7] कौन है
हर ग्रान देखता हूं मैं ग्रपने सनम को शैख़
तेरे ख़ुदा का तालिबे - दीदार[8] कौन है
'सौदा' को जुर्मे-इश्क़ से करते हैं ग्राज क़त्ल
पहचानता है तू ये गुनहगार कौन है ?

◇ ◇ ◇

इस क़दर सादा-ग्रो-पुरकार[9] कहीं देखा है ?
बेनमूद[10] इतना नमूदार[11] कहीं देखा है ?

१. नर्म २. रात ३. कैदखाना ४. बे-ग्रावाज़ ५. निष्ठुर ६. रोने वाला ७. दीवार के पीछे ८. दर्शन का इच्छुक ९ भोला ग्रौर चालाक १०. गुप्त ११. प्रकट

ख़्वाह[1] काबे में तुझे ख़्वाह मैं बुतख़ाने में
इतना समझूं हूं मेरे यार कहीं देखा है
दुख-दहिंद[2] और भी हैं लेक[3] किसू को कोई
दिल सा भी दर-पए-आज़ार[4] कहीं देखा है ?
नज़र आती नहीं अब शक्ले-रिहाई, मुझ-सा
साअ़ते-बद[5] का गिरफ़्तार कहीं देखा है
फिरे है कूचाओ-बाज़ार में तू क्यों 'सौदा'
जिन्से-दिल का भी ख़रीदार कहीं देखा है ?

◇ ◇ ◇

किसी का दर्दे - दिल प्यारे तुम्हारा नाज़ क्या जाने
जो गुज़रे सैद[6] के जी पर उसे शहबाज़[7] क्या जाने
रिहा करना हमें, सय्याद ![8] अब पामाल[9] करना है
फड़कना भी जिसे भूला हो वह परवाज़[10] क्या जाने
न पूछो मुझसे मेरा हाल, टुक जीने दो दुनिया में
ख़ुदा जाने मैं क्या बोलूं कोई ग़म्माज़[11] क्या जाने
जो गुज़री रात मेरे पर किसे मालूम हो तुझ बिन
दिले-परवाना का जुज़[12] शमअ़ कोई राज़ क्या जाने
न पढ़ियो यह ग़ज़ल 'सौदा' तू हर्गिज़ 'मीर' के आगे
वो इन तरज़ों से क्या वाक़िफ़ वो यह अंदाज़ क्या जाने

◇ ◇ ◇

१. चाहे २. दुख देने वाले ३. लेकिन ४. दुख देने के पीछे पड़ा हुआ
५. अशुभ घड़ी ६. शिकार ७. बड़ा बाज़ ८. शिकारी ९. पद-दलित
१०. उड़ान ११. शिकायत करने वाला १२. सिवाए

इश्रत से दो जहां के ये दिल हाथ धो सके
तेरे क़दम को छोड़ सके यह न हो सके
जिस सरज़मीं पे जाके रोऊं तेरी याद में
दहक़ां[१] कुछ उस ज़मीं में बजुज़[२] दिल न बो सके

◇ ◇ ◇

मारेंगे एक दो को या आप ही मर रहेंगे
प्यारे तेरी गली में कुछ हम भी कर रहेंगे
यारब नमत[३] जरस[४] के छाती तो फट गयी है
कब तक हमारे नाले दूर-अज़-असर[५] रहेंगे
अब तो तेरी गली से जाना ही मस्लहत है
देखेंगे फेर आकर जीते अगर रहेंगे
शिकवा है दूर ज़ालिम करना मुरव्वतों से
लबरेज़[६] वर्ना दिल है तेरी शिकायतों से
पुरज़े बग़ैर दिल के मुमकिन नहीं कि होवे
मालूम हाल मेरा तुझको किताबतों[७] से
रखियो असर तू खातिर नाले की टुक हमारे
पहुंचा है दिल से लब तक यह सख़्त ज़हमतों से

◇ ◇ ◇

न फूल ऐ आरसी गर यार को तुझसे मुहब्बत है
भरोसा कुछ नहीं इसका ये मुंह देखे की उल्फ़त है

◇ ◇ ◇

१. किसान २. सिवाए ३. तरह ४. घंटा ५. असर से दूर
६. भरा ७. लिखावटों

दिन रात हर पलक ने मेरी झड़ी लगायी
क्या जाने आंख तुझसे मैं किस घड़ी लगायी
आया नज़र तू जिसको हर इक पलक ने उसकी
मिलने में देर बाहम कितनी बड़ी लगायी
आंखों से आंखें नासेह हरगिज़ बंधी न छूटें
ज़ंजीर की कड़ी पर जैसे कड़ी लगायी

◇ ◇ ◇

गुल फेंके हैं औरों की तरफ़ बल्कि समर[1] भी
ऐ ख़ाना-बर-अंदाज़े-चमन[2] कुछ तो इधर भी
ऐ अब्र[3] क़सम है तुझे रोने की हमारे
तुझ चश्म से टपका है कभू लख़्ते-जिगर[4] भी ?
किस हस्तिए-मौहूम[5] पे नाज़ां[6] है तू ऐ यार ?
कुछ अपने शबो-रोज़[7] की है तुझको ख़बर भी ?
तनहा तेरे मातम में नहीं शाम सियह-पोश[8]
रहता है सदा चाक[9] गिरेबाने-सहर[10] भी
'सौदा' तेरी फ़रियाद से आंखों में कटी रात
आयी है सहर होने को ज़ालिम कहीं मर भी

◇ ◇ ◇

बहार बे-सिपरे-जाम[11] यार गुज़रे है
नसीम तीर-सी छाती के पार गुज़रे है

१. फल २. जिसका घर बाग़ की तरह हो ३. बादल ४. जिगर का टुकड़ा ५. मिथ्या जीवन ६. गर्वित ७. रात-दिन ८. काले कपड़े पहने ९. फटा १०. सुबह का गिरेबान ११. प्याले-रूपी ढाल के बग़ैर

हज़ार हर्फ़ शिकायत का देखते ही तुझे
ज़बां पे शुक्र हो बे - इख़्तियार गुज़रे है
कहे है आज तेरे दर पे इज़्तराबे-नसीम[1]
कि इस जहां से कोई ख़ाकसार गुज़रे है
मुझे तो देखके जोशो-ख़रोश 'सौदा' का
इसी ही सोच में लैलो - निहार[2] गुज़रे है
ये आदमी है कि सर मारता फिरे है ब-संग
कि बादे-तुंद[3] सुए-कोहसार[4] गुज़रे है

◇ ◇ ◇

बदला तेरे सितम का कोई तुझसे क्या करे
अपना ही तू फ़रेफ़ता[5] होवे ख़ुदा करे!!
क़ातिल हमारी लाश को तशहीर[6] है ज़रूर
आइंदा ता[7] कोई न किसी से वफ़ा[8] करे
फ़िक्रे-मुआश[9], इश्क़े-बुतां, यादे-रफ़्तगां[10]
इस ज़िन्दगी में अब कोई क्या-क्या किया करे
गर हो शराबो - ख़िलवतो - महबूबे - ख़ूबरू
ज़ाहिद तुझे क़सम है जो तू हो तो क्या करे
तनहा न रोज़े-हिज्र है 'सौदा' पे यह सितम
परवाना-साँ[11] विसाल की हर शब जला करे

◇ ◇ ◇

१. हवा की बेचैनी २. रात-दिन ३. आंधी ४. पहाड़ की तरफ़
५. आसक्त ६. विज्ञापन ७. ताकि ८. प्रेम ९. जीविका की चिन्ता
१०. मरने वालों की याद ११. परवाने की तरह

भर नज़र तुझको न देखा कभू डरते-डरते
हसरतें जी की रहीं जी ही में मरते-मरते
खेंचते क्या हो मियां तेग़ कि यां रिश्तए-उम्र[1]
सर्फ़[2] सीने पे हुआ टांके ही भरते-भरते
बहरे-गुलगश्त[3] अदम[4] से जो कोई पहुंचा है
सिम्त इस बाग़ के तै मंज़िलें करते-करते
फल जवानी का न पाया कभू ज्यूं तिफ़्ले-सरश्क[5]
मिल गया ख़ाक में यां पांव ही धरते-धरते
हमें क्या फ़ायदा आंखों से बक़ौले - 'सौदा'
भर नज़र तुमको न देखा कभू डरते-डरते

◇ ◇ ◇

ज्यूं गुंचा तू चमन में बन्दे - क़बा को खोले
फिर गुल से ऐ पियारे बुलबुल कभू न बोले
आवेगा वह चमन में तड़के ही मैकशी[6] को
शबनम से कह दे बुलबुल गुल के पियाले धो ले
बाग़े-जहां में आकर कुछ हमने फल न पाया
इक दिल मिला कि जिसमें हैं सैकड़ों फफोले
ऐसा ही जाऊं-जाऊं करते हो तो सिधारो
इस-दिल पे कल जो होनी सो आज ही वो हो ले

१. उम्र का डोरा २. ख़र्च ३. सैर के लिए ४. अस्तित्वहीनता
५. आंसू-रूपी बच्चा ६. मद्यपान

चश्मे-पुरआब[१] हूं मैं ज्यूं आईना-हुबाबी[२]
रुक-रुक के पड़ गये हैं छाती में सब फफोले
कौन ऐसा अब कहे है 'सौदा' गली में उसकी
आ तुझको ले चलें हम दिल खोलकर तू रोले

◇ ◇ ◇

हर आन यास[३] बढ़नी हर दम उमीद घटनी
दिन हश्र[४] का है अब तो फ़ुरक़त की रात कटनी
पौ का नहीं है फटना मुझ सीना-चाक[५] की है
हर सुबह बारे-ग़म[६] से छाती फ़लक[७] की फटनी
कूचे में उसके बाक़ी मुझ ख़ाकसार पर अब
या आसमां का गिरना या है ज़मीं उलटनी
आईना कह रहा था ख़ूबों[८] के साफ़ मुंह पर
हैं एक दिन ये शक्लें सब ख़ाक बीच अटनी

◇ ◇ ◇

१. आंसू भरी आंख २. ऐसे दर्पण जिनमें हवा के बुलबुले सजावट के लिए छोड़ दिए जाते हैं ३. निराशा ४. क़यामत ५. फटे सीने वाला ६. रंज का बोझ ७. आसमान ८. सुंदर व्यक्तियों

क़सीदा

(नवाब आसफ़उद्दौला की प्रशंसा में)

'सौदा' पे जब जुनूँ ने किया ख़्वाबो-ख़ुर[१] हराम
लाये घर उस तबीब[२] कि है अक़्ल जिसका नाम
अहवाल उसका देखके कहने लगा तबीब
अब फ़स्दो-मुसहिल[३] इसके लिए है मुफ़ीदे-ताम[४]
कहने लगा सुन उसको वो दीवाना दर-जवाब
मुझ में लहू कहां ये तेरा है खयाल ख़ाम
जो कुछ कि मेरे तन में लहू था सो अब की साल
आमिल ने खैराबाद के पीकर किया तमाम
मुसहिल तलब करे है ग़िज़ा की ज़ियादती
सो मुझको माहे-ईद भी गुज़रा महे-सयाम[५]
क्या सूद[६] इस इलाज से कह उसके मासिवा[७]
ता[८] अपनी मैं दवा करूं अब करके क़र्ज़ दाम
तब उनने यूँ कहा कि बताऊं मैं वो इलाज
इस दर्द से तू पाके शिफ़ा[९] हो जो शाद-काम
उनके हुज़ूर[१०] अर्ज़ ये कर जिसके साये में
मोरे-ज़ईफ़[११] पील[१२] से ले अपना इन्तक़ाम[१३]

१. खाना-सोना २. हकीम ३. खून निकालना और जुलाब
४. एकमात्र इलाज ५. रमजान (रोजों) का महीना ६. लाभ
७. सिवाए ८. ताकि ९. स्वास्थ्य १०. सामने ११. कमजोर चींटी
१२. हाथी १३. बदला

सुनते ही यह नवेद क़सीदा बराय-नज़्र
लेकर अब इस जनाब में हाज़िर हुआ ग़ुलाम

मतलअ़

ऐ वह कि तेरे अ़द्ल[1] की निस्बत ब - ख़ासो - आ़म
नौशेरवाँ पे अ़द्ल का गोया है इल्तहाम[2]
देता है तेरे अ़स्र[3] में ऐ आ़दिले - ज़मां[4]
ज़ख़्मे - जिगर को सूदए - अलमास[5] इल्तियाम[6]
क्या-क्या ही ख़ूबियों से किया हक़[7] ने तुझको ख़ल्क़[8]
इब्नाए - रोज़गार[9] के ऐ फ़ख़्रो - एहतराम[10]
मजकूर हिल्म[11] का मैं करूं या बयाने - ख़ुल्क़[12]
या मैं तेरी शुजाअ़त - ओ - हिम्मत से अब कलाम
आवे नसीम[13] अगर चमने - ख़ुल्क़ से तेरे
ख़ुशबू जहानियों[14] का रहे ता-अबद[15] मशाम[16]
तेरा ही बारे - हिल्म है ऐ साहबे - विक़ार[17]
कश्ती - ए - ख़ाकदां[18] का जो पानी पे है मुक़ाम
तुझ नारए-ग़ज़ब[19] की ये सौलत[20] है गर सुनें
फ़ैसल[21] हों बर्रो-बह्र[22] के बाशिंदगां तमाम

१. न्याय २. तोहमत ३. ज़माना ४. संसार का न्यायकर्ता ५. हीरे की कनी ६. घाव भरना ७. ईश्वर ८. बनाना ९. दुनियावालों १०. गौरव ११. विनयशीलता १२. विनयशीलता का बयान १३. हवा १४. दुनिया वालों १५. संसार के अंत तक १६. नाक १७. प्रतिष्ठा वाले १८. महान पृथ्वी रूपी नाव १९. क्रोध की गरज २०. दबदबा २१. ठहर जायं २२. जल-थल

ज़ह्‌रा[१] हो आब सीने में हैबत[२] से शेर का
तड़पे निहंग[३] प्यास से माही[४] हो ज्यूं ब-दाम[५]

अशजअ़[६] तू इस क़दर है कि मैदाँ में रोज़े-जंग
क्या ताब रू-ब-रू हों तेरे रुस्तम और साम

क़ालिब-तिही[७] करें वो क़लम उसकी देखकर
तसवीर तेरी तेग़ की खेंचे जो बे - नियाम

तेग़े-सख़ा[८] भी ऐसी है जिससे ब-मुल्के-दिल
पाते हैं गढ़ ग़मों के ब-यक-साअ़त[९] इनह्‌दाम[१०]

सायल[११] के घर में कब तेरी बख़्शिश समा सके
ता[१२] उसके घर का ता-ब-फ़लक[१३] होवे पुश्ते-बाम[१४]

बाग़े - जहां में आज तू वो नख़्ले - सब्ज़[१५] है
पहुंचे है चार फ़स्ल समर[१६] तुझसे रूम-ओ-शाम

तेरा ही अब ब-रूए - ज़मीं ऐ फ़लक-जनाब[१७]
बे-क़ुफ़्ल[१८] बे-कुलीद[१९] दरे-फ़ैज़[२०] है मुदाम[२१]

पैदा ख़वास साये में उसके हुमा के हो
तुझ मरज़ए-करम[२२] से चुने दाने गर हमाम[२३]

१. पित्ता २. डर ३. घड़ियाल ४. मछली ५. जाल में ६. बहादुर ७. बदन छुपाना ८ दान की तलवार ९. एक घड़ी में १०. गिरना ११. भिखारी १२. जब तक १३. आसमान तक १४. छत १५. हरा पेड़ १६. फल १७. आसमान जैसे ऊंचे १८. बिना ताले १९. बिना कुंजी २०. दान का द्वार २१. खुला २२. दान का खेत २३. कबूतर

मैं रख़्शे-बाद-पा[1] की तेरे शक्ल क्या कहूं
बच्चा तो हूर का है वलेकिन फ़रस[2] बनाम
उठते गुबार सुम से न देखा कि जब इनां[3]
उचके जो क़ाशे-ज़ीं[4] से ज़मीं पर लगा न गाम[5]
पहुंचा न उसका साया भी उसके क़दम तलक
ता तूने उसकी रूमीं इनां को लिया न थाम
अअ़्दाए - बदख़िसाल[6] की तंबोह के लिए
इस बर्क़-वश[7] की पुश्त पे तेरा हो जब क़याम
हो तर्रक़ो - कुनां[8] तेरा इक़बाल पेश - पेश
नुसरत[9] करे जिलौ[10] तेरी और फ़तेह एहतमाम
कुछ कम नहीं जहां में सुलेमां से तेरा जाह[11]
गो अल्सना[12] पे आसफ़े-दौला है तेरा नाम
तू वह वज़ीरे - हिन्द कि हैरान हो रहें
शाहाने - अस्र[13] देखके तेरा ये एहतशाम[14]
मतबख़[15] का एक ख़र्च तेरे गर बयां करूं
इस ज़िक्र को कफ़ाफ़[16] न हो सद-ज़बां-ब-काम[17]
फ़ैज़ उसका इस क़दर है जो हैं उसके रेज़ा - चीं[18]
ख़्वाने-करम[19] पे अपने वो दे हैं सलाए-आम[20]

---

१. तेज़ घोड़ा २. घोड़ा ३. लगाम ४. ज़ीन ५. क़दम
६. बदमाश दुश्मनों ७. बिजली जैसे ८. आवाज़ देता हुआ ९. विजय
१०. साथ ११. रुतबा १२. भाषा १३. ज़माने के बादशाह १४. शान
१५. बावर्ची-ख़ाना १६. काफ़ी १७. मुंह में सौ ज़बानें होना १८. टुकड़े बीनने वाले १९. थाल २०. सब लोगों की दावत

रुत्बा तेरा है वह जो करे क़स्द उधर को वह्म[1]
पहुंचे न मांदगी[2] से बयक-कूच दो मुक़ाम
ज़र्रा करे है खाक का उसकी फ़लक पे नाज़
जिस गुल-ज़मीं पे सैर में करता है तू ख़िराम[3]
तुझ-से की कोई मदहो-सना[4] मुझसे हो सके
मैं क्या हूं, क्या ज़बां मेरी, और क्या मेरा कलाम
इस नज़्म से ग़रज़ है मुझे अर्ज़े - मुद्दआ
मक़सद मेरा क़लील[5] है पहुंचे ब - इंसराम[6]
अपनी तेरी जनाब में इतनी ही अर्ज़ है
किस-किस का मुल्तजी[7] हूं कहाकर तेरा ग़ुलाम
इंसाफ़ है कि वह हो अता[8] इस जनाब की
और उनकी मैं समाजत-ओ-मिन्नत करूं मुदाम[9] ?
देहात जो हैं मसरफ़े-मतबख़[10] के, उसमें से
इस नक़दी के इवज़ हो मुझे सहनके-तआम[11]
ऐ गंज - बख़्शे - ख़ल्क़[12] मेरा है जो मुद्दआ
करना रवा हुज़ूर[13] तेरे किस क़दर है काम
'सौदा' बस अब खमोश कि जाए-अदब[14] है यह
इस नज़्म का तू कर ब-दुआईया[15] इख़्तताम[16]

१. कल्पना २. थकावट ३. चलना ४. प्रशंसा ५. थोड़ा ६. पूर्णता को ७. मांगने वाला ८. देन ९. हमेशा १०. बावर्चीख़ाने का ख़र्च ११. खाने की तश्तरी १२. संसार को ख़ज़ाना देने वाले १३. सामने १४. अदब की जगह १५. दुआ के साथ १६. अंत

ताबिन्दा[1] जब तलक ब-फ़लक[2] होवें मेह्रो-माह[3]
ता[4] जल्वागर रहें ब-जहां सुब्ह और शाम
दुनिया हो और तू हो इलाही ब-ख़ुर्रमी[5]
तेरे नसीब जामे-मए-ऐश हो मुदाम

◇ ◇ ◇

१. चमकने वाले २. आसमान पर ३. सूर्य-चन्द्र ४. जब तक
५. ख़ुशी से

क़सीदा शहर आशोब

(ज़माने की बदहाली पर क़सीदा)

अब सामने मेरे जो कोई पीरो-जवां[१] है
दावा न करे यह कि मेरे मुंह में ज़बां है
मैं हज़रते-'सौदा' को सुना बोलते यारो
अल्लाह रे अल्लाह है क्या नज़्मे-बयां[२] है
इतना मैं किया अर्ज़ कि फ़रमाइए हज़रत
आराम से कटने की तरह कोई भी यां है
सुनकर ये लगे कहने कि ख़ामोश ही रह जा
इस अम्र[३] में क़ासिर[४] तो फ़रिश्ते की ज़बां है
क्या-क्या मैं बताऊं कि ज़माने की कई शक्ल
है वजहे-मुआश[५] अपनी सी जिसका ये बयां है
घोड़ा ले अगर नौकरी करते हैं किसू की
तनख़्वाह का फिर आलमे-बाला[६] पे निशां है
गुज़रे है सदा यूं अलफ़ो-दाना[७] की ख़ातिर
शमशीर जो घर में तो सिपर[८] बनिये के यां है

१. बूढ़ा, जवान २. कहने का ढंग ३. बात ४. लाचार
५. आजीविका ६. आसमान ७. दाना-घास ८. ढाल

साबित[1] हो जो दगला[2] तो नहीं मोज़ों में कुछ हाल
तीरों में है पर-गीरी[3] तो बे-चिल्ला[4] कमां है
कहता है नफ़र[5] गुर्रे[6] को सर्राफ़ से जाकर
बीवी ने तो कुछ खाया है फ़ाक़े से मियां है
यह सुनके दिया कुछ तो हुई ईद, वगर्ना
शव्वाल[7] भी फिर माहे-मुबारक रमज़ां है
इस रंज से जब चढ़ गये छत्तीस महीने
तनख़्वाह का फिर पीटना इस शक्ल से यां है
लेते हैं ब-ईं-रूसियही[8] वह तो दो-माहा
टुक धौंस धड़क्के की जिन्हें ताबो-तवां[9] है
क़ाज़ी की जो मसजिद है गधा बांध के उसमें
बैठा हुआ उस शक्ल से हर पीरो-जवां है
मुल्ला जो अज़ां देवे तो मुंह मूंद के उसका
कहते हैं कि ख़ामोश, मुसलमानी कहां है
बोला जो ख़तीब[10] उसमें तो मारी उसे इक धौल
हाथ आ गया वाइज़ तो थपेड़ा व दहां[11] है
रेंके है गधा आठ पहर घर में ख़ुदा के
नै ज़िक्र, न सलवात, न सिजदा, न अज़ां है

१. बग़ैर फटी, मज़बूत २. सिपाहियों की पोशाक ३. पर लगा (दुरुस्त) होना ४. डोरी ५. नौकर ६. ईद के पहले का दिन ७. रमज़ान के आगे वाला महीना ८. इस फ़ज़ीहत के साथ ९. ताक़त १०. धार्मिक भाषरण-कर्ता ११. मुंह

ग्रौर वह जो हैं कमज़ोर वहां ग्रान के बैठें
रेती के जो ग्रागे की ये हर एक दुकां है
उठ-उठके दिखाते हैं उन्हें हाल वो ग्रपना
दरबार-रो[१] इस ग्रहद में जो ख़ुर्दो-कलां[२] है
यूं भी न मिला कुछ तो हर इक पालकी ग्रागे
इस सज से रिसाले का रिसाला ही रवां है
कोई सर पे किये खाक गिरेबां किसी का चाक
कोई रोवे है मुंह पीट के कोई नारा-ज़नां[३] है
हिन्दू व मुसलमां को फिर उस पालकी ऊपर
ग्ररथी का तवह्हुम[४] है जनाज़े का गुमां है
यह मसखरगी देख के जा साहबे-ग्ररथी
करते हैं जो वां ग्रर्ज़ तो फिर ना है न हां है
गर हूजिए जाकर किसी उमदा[५] के मुसाहिब
उसकी तो ग्रज़ीयत ही बड़ी ग्राफ़ते-जां है
वह जागे जो रातों को तो बैठे हैं दो-ज़ानू
कैसा ही ग्रगर ग्रपने तईं ख्वाबे-गिरां[६] है
बे-वक़्त ख़ुरश[७] उसकी जो हो ग्रपने तईं भूख
सो क्या कहूं तुझसे कि मुसीबत का बयां है
घड़ियाल की चुप बैठे हुए सुनते हैं घड़ियां
ग्रौर रैहे-खला[८] रोदों[९] में ज्यूं ग्रस्प[१०] रवां है

१. दरबार जाने वाला २. छोटा-बड़ा ३. चिल्लाता हुग्रा ४. शक ५. ग्रमीर ६. भारी नींद ७. खाना ८. खाली पेट की हवा ९. पेट के नलकों १०. घोड़ा

खमियाज़े[१] पे खमियाज़ा है और चर्त[२] उपर चर्त
मुंह सूरते - सूफ़ार[३] मगर शक्ले - दहां[४] है
सीग़े[५] पे तबाबत[६] के भला आदमी नौकर
सौ दो सौ रुपये का जो किसी उमदा के यां है
सोहबत है ये उससे अगर आक़ा के तईं छींक
आवे तो वो उसको ब-खशूनत[७] निगरां[८] है
देते हैं मंगा तीरो - कमां हाथ में उसके
ठंडी हवा आने का गर उस वक़्त गुमां है
और मा-हज़र[९] ऊपर जो वो नव्वाब को देखे
खाना तो वो खाते हैं पे उसको ख़फ़क़ां[१०] है
मतबूख़[११] में है खरपुज़ा[१२] और ख़रपुज़े पर दूध
है दूध पे मछली तिस उपर गावज़बां है
यह भी तो नहीं है कि इसी से हो तसल्ली
इस सब पे तफ़न्नुन[१३] के लिए बेसनी नां[१४] है
इसमें जो कहीं दर्द उठा पेट में उनके
फिर बू-अ़ली-सीना[१५] है तो वह हेच-मदां[१६] है
रखते हैं ग़रज़ मर्ग[१७] से लड़ने को सिपाही
गर नौकरी समझो ये तबाबत्त की कहां है

१. अंगड़ाई २. जम्हाई ३. तीर के मुंह की तरह ४. मुंह की शक्ल का ५. विभाग ६. हकीमी ७. क्रोध से ८. देखता ९. दोपहर का खाना १०. उन्माद ११. खाने १२. खरबूज़ा १३. जायक़ा बदलना १४. रोटी १५. एक मशहूर हकीम १६. कुछ न जानने वाला १७. मौत

सौदागरी कीजै तो है इसमें ये मशक़्क़त
दक्खिन में बिके वह जो ख़रीदे-सफ़हां[1] है
हर सुब्ह ये ख़तरा है कि तै कीजिए मंज़िल
हर शाम ब-दिल वसवसए-सूदो-ज़ियां[2] है
लेजा जो किसी उमदा की सरकार में वे जिन्स
यह दर्द जो सुनिए तो अ़जब तुर्फ़ा बयां है
क़ीमत जो चुकाते हैं सो इस तरह कि सालस[3]
समझे है फ़रोशंदा[4] पे दुज़्दी[5] का गुमां है
जब मोले-मुशख़्ख़स[6] हुआ मरज़ी के मुआफ़िक़
फिर पैसों की जागीर के आ़मिल[7] पे निशां है
परवाना लिखाकर गये आ़मिल कने जिस वक़्त
कहता है वो पैसा अभी मुझ पास कहां है
ऊधर से फिर आये तो कहा जिन्स ही ले जा
दीवाने - बयूतात[8] ये कहते हैं गिरां[9] है
आख़िर को जो देखो तो न पैसे हैं न वह जिन्स
हर इक मुतसद्दी से मियां और तियां[10] है
नाचार हो फिर जमअ़ हुए क़िले के आगे
जो पालकी निकले है तो फ़रियादो-फ़ुग़ां है
दो बैल को जाकर जो कहीं कीजिए खेती
और मेंह भी मुआफ़िक़ ही पड़े तो तो समां है

१. अस्फहान (ईरान का एक शहर) की ख़रीदी हुई चीज़ २. लाभ-हानि का डर ३. बिचवानी ४. बेचने वाला ५. चोरी ६. तय की हुई क़ीमत ७. अकाउंटेंट ८. ज़नानख़ाने के दीवान ९. महंगा १०. तू-तू मैं-मैं

हैं खुश्की-ओ-क़ुर्की के तफ़क्कुर[1] में शबो-रोज़[2]
नै अम्न है दिल के तईं नै जी को अमाँ है
गर खानो-खवानीन[3] की ले कोई वकालत
इसका तो बयाँ क्या करूं तुझसे कि अयाँ[4] है
हर उमदा के दरवाज़े पे ज़ीं-पोश पे बैठा
पूछे है अजी मिरदहे नव्वाब कहाँ है
हर घर में वो चाहे कि मैं फ़व्वारा-सा छूटूं
हर कूचे में ज्यूं आबे - चकाबूदा[5] दवां[6] है
दीवान के, बख्शी के, बयूतात के हाज़िर
मानिन्द कन्हैया के जहां देखो तहां है
हर बात पलटता ही रहे सुब्ह से ता-शाम
पीपल के पतौवे की तरह मुंह में ज़बां है
लावे जो कचहरी से वो दामों का सियाहा
ललचावे मुवक्किल को ये क्या खूब मकां है
सौ माही ये बैठो है वले पांच सौ है खर्च
और ज़र[7] के इजारे[8] की भी उर्दू[9] में दुकां है
बुत्ता दे ग़रज़ पैसे उड़ाकर हुआ रू-पोश[10]
घर जा के पुकारे जो कोई लाला कहां है
जिस वक़्त सुना यह वहीं आवाज़ बदलकर
आप ही कहा घर में से "किशनचन्द के यां है"

---

१. चिंता २. रात-दिन ३. रईसों ४. प्रकट ५. नहर का पानी ६. दौड़ने वाला ७. धन ८. मिलना ९. लश्कर १०. ग़ायब

फिर जो हो मुवक्किल से कहीं राह में भेंटा
असनाद[1] का जागीर के यह उससे बयां है
"अर्ज़ी पे हुआ 'मीम' सियाहे पे हुआ 'जीम'
परवाना मैं तुम पर हूं तसद्दुक़[2] मेरी जां है"
काहे की ग़रज़ अर्ज़ी वो और किसका सियाहा
कीधर का वो परवाना वो जागीर कहां है
इंसाफ़ जो कीजे तो नहीं उसकी भी तक़सीर
सब माहसल[3] इन बातों का इक पारचा[4] नां है
शायर जो सुने जाते हैं मुस्तग़नी-उल-अहवाल[5]
देखे जो कोई फ़िक्रो-तरद्दुद को तो यां है
मुश्ताक़े - मुलाक़ात उन्हों का कसो-नाकस[6]
मिलना उन्हें उनसे जो फ़लां-इब्ने-फलां[7] है
गर ईद का मसजिद में पढ़े जाके दुगाना[8]
नीयत क़िताए - तहनियते - ख़ाने - ज़मां[9] है
तारीख़े - तवल्लुद[10] की रहे आठ पहर फ़िक्र
गर रहम[11] में बेगम के सुने नुत्फ़ए-ख़ां[12] है
इस्क़ाते-हमल[13] हो तो कहें मर्सिया ऐसा
फिर कोई न पूछे मियां मिस्कीन[14] कहां है

१. सनदों २. न्यौछावर ३. उद्देश्य ४. टुकड़ा ५. चिंता-मुक्त ६. छोटा-बड़ा ७. ख़ानदानी आदमी ८. एक तरह की नमाज़ ९. नवाब की मुबारकबाद का क़िता १०. बच्चे के जन्म की तारीख़ की कविता ११. बच्चेदानी १२. ख़ान का बीज (बच्चा) १३. गर्भपात १४. एक मशहूर मर्सिया-गो

मुल्लाई अगर कीजे तो मुल्ला की है यह क़द्र
हों दो रुपये उसके जो कोई मसनवी-ख़्वां है
और मा-हज़र अख़वन्द[1] का अब क्या मैं बताऊं
यक कासए-दाले-अदस[2] और जौ की दो नां है
दिन को तो बेचारा वो पढ़ाया करे लड़के
शब ख़र्च लिखे घर का अगर हिन्दसा-दां[3] है
तिस पर ये सितम है कि निहाली[4] तले उसके
लड़कों की शरारत से सदा ख़ार निहां[5] है
भागे ये सितम कर जो वो शैतान का लश्कर
दीवाली को ले हाथ तआक़्क़ुब[6] में दवां है
अब कीजिए इंसाफ़ कि जिसकी हो ये औक़ात
आराम जो चाहे वो करे वक़्त कहां है
जिस रोज़ से कातिब का लिखा हाल मैं, तब से
हर सफ़हए-काग़ज़ पे क़लम अश्क-फ़शां[7] है
वह बैत[8] टके सैकड़े लिखने को है मोहताज
ख़ूबी में ख़त[9] अब जिसका बह-अज़-ख़त्ते-बुतां[10] है
यह भी मैं तकल्लुफ़ ही से कहता हूं वगर्ना
आफ़ाक़[11] में इन चीज़ों की अब क़द्र कहां है

१. अध्यापक २. मसूर की दाल का प्याला ३. हिसाब जानने वाला ४. बैठने का आसन ५. छुपा ६. पीछा करना ७. आंसू बरसाता हुआ ८. शे'र ९. लिखावट १०. सुन्दर लड़कों की रेखों से अधिक ११. दुनिया

अह्या[1] जो हो मोती का ज़माने में नये सू
ख़त्तात[2] को उतनी ही रही क़द्र कहां है
हिदिया[3] हो सवा पांच टके गुज़रे में आकर
याक़ूत पुकारे जो बिकाऊ क़ुरआं है
दमड़ी को किताबत लिखें धेले को क़बाला[4]
बैठे हुए वां मीर अली चौक जहाँ है
चाहा जो कोई शेख़ बने बह्रे - फ़राग़त[5]
छुटते ही तो शोअ़रा[6] की वो मतऊन[7] ज़बां है
देता है दुमे-ख़र[8] से कोई शिमले को निस्बत
गुम्बद से कोई पगड़ी को तशबीह-कुनाँ[9] है
और उसको जो देखे कोई वह बह्रे - मईशत[10]
इस फ़िक्रो-तरद्दुद ही में हर एक ज़माँ[11] है
पूछे है मुरीदों से वो हर सुब्ह को उठकर
है आज किधर उर्स की शब रोज़ कहां है
तहक़ीक़[12] हुआ उर्स तो कर दाढ़ी को कंघी
ले ख़ैले - मुरीदां[13] वो गये बज़्म जहां है
ढोलक जो लगी बजने तो वां सबको हुआ वज्द[14]
कोई कूदे कोई रोवे कोई नारा - ज़नां है

---

१. ज़िन्दा करना २. लिखने वालों ३. भेंट (क़ीमत) ४. दस्तावेज़ ५. आराम के लिए ६. कवियों ७. गाली के साथ ८. गधे की दुम ९. उपमा देने वाला १०. रोज़ी के लिए ११. समय १२. मालूम १३. चेलों का झुंड १४. मस्ती

बे-ताल हुए शैख़ जो टुक वज्द में आकर
सरगोशियों में मद्दे - उसूली[1] का बयां है
गर ताल से पड़ता है क़दम तो सभी हँस-हँस
कहते हैं, "कोई हाल[2] है यह ? रक़्से-ज़नां[3] है"
और माहसल इस रंजो - मशक़्क़त का जो पूछो
डाला हुआ वां दाले-नख़ुद[4] क़लिया-ओ-नां है
सब पेशा ये तजकर जो कोई हो मुतवक्किल[5]
जोरू तो समझती है निखट्टू ये मियां है
और बेटी के दिल को है खुराफ़त[6] का तयक़्क़ुन[7]
बेटे को जुनूं होने का बावा के गुमां है
फिर शैख़ के जब लड़के लगे भूख से मरने
हर ख़ानो - ख़वानीन के हमराह दवां है
जब राहे - ख़ुदा पैसे निकाले कोई नव्वाब
तब उनकी सिफ़ारिश में उसे रुक़्क़ए-ख़ां है
मज़मूं यही रुक़्क़े का कि कुछ दीजिए इसको
मद्दाह[8] इमामों का है और मर्सिया-ख़्वां है
बिल्फ़र्ज़ हुए आप अगर हफ़्त - हज़ारी
यह शक्ल भी मत समझियो तू राहते-जां है
टुक देखना मंसूर अली ख़ां जी का अहवाल
छाती पे कड़क-बिजली[9] है और शेर-दहां[10] है

१. सिद्धान्तों २. मस्ती ३. औरतों का नाच ४. चने की दाल
५. संतोष करने वाला ६. झक्कीपन ७. विश्वास ८. प्रशंसक
९. एक हथियार १०. एक हथियार

आराम से कटने का सुना तूने कुछ अहवाल
जमईयते - ख़ातिर[१] कोई सूरत हो, कहां है
दुनिया में तो आसूदगी[२] रखती है फ़क़त नाम
उक़बा[३] में, ये कहता है कोई, उसका निशां है
सो उस पे तयक़्क़ुन किसी के दिल को नहीं है
यह बात भी गोयन्दा[४] ही का महज़ बयां है
यां फ़िक्रे-मईशत[५] है तो वां दग़दग़ए-हश्र[६]
आसूदगी हर्फ़ेस्त[७] न यां है न वहां है

◇ ◇ ◇

१. दिल खुश होना २. सुख मिलना ३. परलोक ४. कहने वाला ५. जीविका की चिन्ता ६. क़यामत का शोर और आतंक ७. एक हर्फ़ है (जो)

'मीर' पर कटाक्ष

एक मुशफ़िक़[1] के घर गया था मैं
सुनो टुक नक़ल यह अजायब है
उनके घर में है एक मर्दे-बुज़ुर्ग
ख़ुशनवीसी[2] के फ़न से कासिब[3] है
राक़िमे - सरनविश्त[4] का उसको
है बजा गर कहूं कि नायब[5] है
कहने लागा वो आके मजलिस में
आह यह नफ़्से-शूम[6] ग़ालिब[7] है
वर्ना लिखने से हाथ उठाऊं मैं
क्या करूं फ़िक्रे-क़ूत[8] वाजिब है
मैं जो पूछा सबब, कहा मत पूछ
बात कहनी ये नामुनासिब है
लेकिन इस वास्ते मैं कहता हूं
दर्द सुनने का तू जो तालिब[9] है
है जो कुछ नज़्मो-नस्र[10] आलम में
ज़ेरे - ईरादे - 'मीर' साहब[11] है
हर वरक़ पर है 'मीर' की इस्लाह[12]
लोग कहते हैं सहवे-कातिब[13] है

o o o

१. मित्र २. सुलेखन ३. दक्ष ४. भाग्य लिखने वाला ५. स्थानापन्न ६. कमबख्त स्वार्थ ७. विजयी ८. खाने की चिन्ता ९. इच्छुक १०. गद्य-पद्य ११. 'मीर' के द्वारा लायी जाने वाली १२. संशोधन १३. कातिब (सुलेखक) की ग़लती

रुबाइयां

मोमिन[१] नहीं ज़ुन्नार[२] से मेरे आगाह
इस रिश्ते[३] को है सब्हए-इस्लाम[४] में राह
उस बुत का बरहमन हूं कि हम-सूफ़ी-ओ-शैख़[५]
कहते हैं जिसे देख के अल्ला - अल्लाह

◇ ◇ ◇

ऐ शैख़ हरम[६] तक तुझे आना जाना
यह तौफ़[७] जुलाहे का है ताना बाना
पहचानेगा वां क्या उसे हैरान हूं मैं
जिसको हरमे - दिल में न तैं पहचाना

◇ ◇ ◇

है ज़ेरे - फ़लक[८] जितनी कि यह मौजूदात[९]
हर एक की इक तरह कटे है औक़ात
ऐ शैख़ किया ख़ूब ये हमने तहक़ीक़[१०]
शैख़ी व करामत है बन आये की बात

◇ ◇ ◇

गर मह[११] से बुलन्दी में हुआ तू दह - चन्द[१२]
पस्तों[१३] की तरफ़ देख के मत हो ख़ुरसंद[१४]
जितने कि बुलन्दों की हैं नज़रों में पस्त
पस्तों की भी नज़रों में हैं उतने ही बुलंद

◇ ◇ ◇

---

१. धार्मिक मुसलमान २. जनेऊ ३. धागा ४. इस्लामी माला ५. सूफ़ी और शैख़ भी ६. काबा ७. परिक्रमा ८. आकाश के नीचे ९. सृष्टि १०. खोज ११. चांद १२. दसगुना १३. नीचे वालों १४. ख़ुश

'सौदा' पए-दुनिया[1] तू ब-हर-सू[2] कब तक
आवारा अज़ीं-कूचा[3] ब-आं-कू[4] कब तक
हासिल यही इससे न कि ता[5] दुनिया हो ?
बिल्फ़र्ज़ हुआ यूं भी तो फिर तू कब तक

◇ ◇ ◇

मुंह फेरे है गो देख के हम को आलम
क़द्र इससे कुछ अपनो नहीं होतो कम
इतना है बड़ा हमको किया ख़ालिक़[6] ने
खिलक़त[7] की नज़र में नहीं आ सकते हम

◇ ◇ ◇

'मज़हर'[8] का हुआ जो क़ातिल एक मुरतद-शूम[9]
और उसकी हुई खबर शहादत की अमूम[10]
तारीखे-वफ़ात उसकी कही अज़-रूए-दर्द[11]
'सौदा' ने कि हाय जानजानां मज़लूम[12]

◇ ◇ ◇

अफ़सोस कहूं मैं किस से अपने घट की
क़ालिब[13] से फिरे है रूह भटकी - भटकी
इन आंख ने चैन जो से खोया 'सौदा'
यह ख़ाना - ख़राब[14] जिससे अटकी, अटकी

◇ ◇ ◇

१. संसार के लिए २. हर ओर ३. इस गली से ४. उस गली को ५. ताकि ६. ईश्वर ७. संसार ८. मिर्ज़ा मज़हर जानजानां (उर्दू के प्रसिद्ध कवि) जिन्हें एक बदमाश ने मार डाला था ९. धर्म-विमुख १०. मशहूर ११. दर्द के साथ १२. पीड़ित १३. शरीर १४. अभागी

विविध शे'र

क्या ख़ुशी हमको कि अपनी है ये हैरानी की तरह[1]
देखते हैं ईदे-आलम[2] चश्मे-क़ुरबानी[3] की तरह

◇ ◇ ◇

आगे या क़िस्मत जिलावे यार या मारे हमें
अब तो आंखों से लगा है देखना बारे हमें

◇ ◇ ◇

दिल को तो हर तरह से दिलासा दिया करूं
आंखें तो मानती नहीं मैं इसको क्या करूं

◇ ◇ ◇

ऐ मियां इश्क़ के मारों को कहीं ठौर नहीं
दिल नहीं सब्र नहीं आप नहीं और नहीं

◇ ◇ ◇

सुनके यह कहता है मेरे नालए-जांकाह[4] को
क्यों मुझे ऐसा बनाया, क्या कहूं अल्लाह को

◇ ◇ ◇

वह समुन्दर है कि जिसका न कहीं पाट लगे
कश्तिए-उम्र मेरी देखिए किस घाट लगे

◇ ◇ ◇

मसीहा सुन के उठ जावे जो कुछ कहिए दवा कीजे
मुहब्बत सख़्त बीमारी है इसको आह क्या कीजे

◇ ◇ ◇

---

१. ढंग २. दुनिया की ईद (ख़ुशी) ३. क़ुर्बानी के जानवर की (मुर्दा) आंख ४. जान मारने वाला रुदन

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving